आदि शंकर
रस माधुरी

(चर्पट पंजरिका, महिषासुर मर्दिनी, देव्यापराध क्षमा स्तोत्र एवं निर्वाण अष्टकम् इत्यादि प्रमुख छंद बद्ध अनुवाद)

लेखक एवं अनुवादक
सुरेश चौधरी

suresh choudhary prastuti
सुरेश चौधरी प्रस्तुति

आदि शंकर रस माधुरी
(तृतीय संशोधित संस्करण)

ISBN : 978-93-94660-07-6

प्रबंध कार्यालय :
516/4, बी.एल. साहा रोड, ग्राउंड फ्लोर
कोलकाता - 700038
मो. : 94324-19815
ई-मेल : enterprisesaa2019@gmail.com

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

तृतीय संस्करण 2023

©सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : 200/-

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

A BOOK OF TRANSLATION OF WORK OF ADI SHANKARCHARY FROM SANSKRIT TO HINDI METERED POEMS

॥ ॐ ॥

ब्रह्मलीन स्वामी आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज को समर्पित

अनुक्रमणिका

1.	आचार्य धर्मेन्द्र का आशीर्वचन	06
2.	लेखकीय....	07
3.	भूमिका (द्वितीय संस्करण)	08
4.	भूमिका (तृतीय संस्करण)	09
5.	आदि शंकराचार्य – एक परिचय	11
6.	फोटो फीचर	15
7.	वेदांत के प्रणेता आदि शंकराचार्य	20
8.	आदि शंकर के जन्मतिथि के भरम का निवारण	22
9.	मंडन मिश्र	32
10.	आदि शंकराचार्य द्वारा रचित कनकधारा स्त्रोत	35
11.	श्री जगन्नाथ अष्टकम	45
12.	श्री आदि शंकर रचित कृष्णाष्टकम	52
13.	भज गोविन्दम	57
14.	महिषासुर मर्दिनी	71
15.	देवी अपराध क्षमा स्तोत्र	91

16. निर्वाण षटकम 98

17. श्रीमद शंकराचार्य कृत वेदसारशिवस्तव
स्तोत्र का भावानुवाद 102

18. आदि शंकराचार्य विरचित भ्रामरी षटपदी
पर आधारित 105

19. परिचय 108

20. शुक्तिका प्रकाशन की प्रस्तुति 110

आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र जी महाराज

पंच खंड पीठाधीश्वर

विराटनगर, जी : जयपुर-303102 (राजस्थान)

॥ श्री राम समर्थ॥

''राम! तुम्हारा वृत स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है''

भगवान् भूतभावन महाकाल महेश्वर श्री शंकर के
अवतार स्वरूप भगवान् आदि शंकराचार्य की दिव्य
रचनाओं को जनभाषा में प्रस्तुत करके
कवि सुरेश कुमार चौधरी 'इंदु'
की लेखनी धन्य हुई है।
प्रभु की अमृतमयी अनुकंपा उन पर सर्वदा बनी रहे।

श्री धर्मेन्द्र

मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया, 2073 वि.

लेखकीय....

प्रिय भगवत प्रेमियों

अनुवाद की श्रृंखला में यह मेरी छठी पुस्तक है। इसके पूर्व सर्वप्रथम मैंने श्री दुर्गासप्तशती का भावानुवाद ''श्री दुर्गातिविनाशनी'' नाम से किया, तद्पश्चात् ''वेद से वेदांत तक'' में 9 उपनिषदों एवं 2 वैदिक सूत्रों का काव्यात्मक अनुवाद किया। स्वरांजलि में भागवत सूत्रों का, प्रांजलि में अध्यात्मिक सूत्रों का प्रार्थना स्वरूप अनुवाद किया, फिर शिव जी के प्रमुख श्लोकों का छंद बद्ध अनुवाद ''हर हर महादेव'' में किया। अब आपके सामने यह पुस्तक '**आदि शंकर रस माधुरी**' है, जिसमें आदि शंकराचार्य के जीवन परिचय के साथ-साथ भज गोविन्दम (चर्पट पंजरिका), महिषासुर मर्दिनी एवं देव्यापराध क्षमा स्तोत्र का विभिन्न छंदों में अनुवाद किया ताकि गेयता में रोचकता बनी रहे।

पूर्व में भी मैं कह चूका हूँ कि मैं कोई संस्कृत का विद्वान नहीं बल्कि हिंदी की भी प्रथम कक्षा का छात्र हूँ। अत: गलतियाँ होनी स्वाभाविक है, आप विज्ञ जन मुझे मार्ग दर्शन कीजियेगा तो मैं भूलों को सुधार सकूँगा।

इसी विनम्रता से आपका अभिवादन करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आपको यह प्रयास कैसा लगा, इसे आप अवश्य बतलायेंगे।

आपका

— सुरेश चौधरी 'इंदु'

अक्षय तृतीया 2073

भूमिका

(द्वितीय संस्करण)

प्रिय पाठकगण

प्रभु कृपा एवं स्नेहीजनों के असीम स्नेह से प्रथम संस्करण मुद्रण के एक माह में ही समाप्त हो गया था। पुस्तक की मांग निरंतर बनी हुई थी, अतः इसे पुनः मुद्रित करने का संयोग बना। द्वितीय संस्करण में भगवान् आदि शंकराचार्य द्वारा सृजित निर्वाण षटकम् का अनुवाद कुकुम्भ छंद में करने का प्रयास किया गया है। आशा है मेरा यह भगवद प्रयास आपको पसंद आएगा एवं आप अपना स्नेह पूर्व की भांति देते रहेंगे।

आपका

— सुरेश चौधरी 'इंदु'

फाल्गुन कृष्ण अष्टमी 2076

भूमिका
(तृतीय संस्करण)

आदि शंकर रस माधुरी, भगवान शंकर के अवतार माने गए परम आदरणीय सनातन धर्म ध्वजा प्रवाहक आदि शंकराचार्य द्वारा रचित प्रमुख स्त्रोतों के छंद बद्ध अनुवाद की पुस्तक है। पुस्तक के हर संस्करण में कुछ न कुछ सुधार किए गए। तीसरे संस्करण में अनेकानेक सुधार के साथ चार-पांच नए स्त्रोत को भी जोड़ा गया है।

आदि शंकर के जन्म वर्ष के बारे में बड़ी भ्रम की स्थिति रही है। कोलकाता के परम विद्वान अधिवक्ता जिन्होंने राम मंदिर केस में हिन्दू पक्ष की तरफ से पैरवी की थी श्री परमेश्वर नाथ मिश्रा, उन्होंने आदि शंकराचार्य पर वृहद शोध कार्य किया है और एक 1500 पृष्ठ की पुस्तक भी प्रकाशित की है। उनके अनुसार आदि शंकर का जन्म ईसा से 509 वर्ष पूर्व ही हुआ था, तत्पश्चात् 12 शंकर हुए हैं, जिन्हें भ्रमवश आदि शंकराचार्य मान लिया गया। मैंने एक आलेख इस संस्करण में दिया है, जिसके अनुसार कम से कम 5 शंकराचार्य जी का तो निश्चित अस्तित्व एवं विवरण है।

भारतीय वांग्मय पर लगातार आक्रमण होते रहे हैं और हमारे ग्रंथों को नष्ट किया जाता रहा है, नालंदा इसका उदाहरण है। ऐसे में आदि शंकर के रचना कार्य को भी तहस-नहस किया गया और परवर्ती इतिहासकारों ने भी शंकर नाम से भ्रमित होकर 788 ईसा बाद बताया।

प्रमुख श्लोकों में जो परिवर्तन हुआ है, उसमें मुख्य–महिषासुर मर्दिनी को उसके मूल छंद कनकमंजरी में परिवर्तित किया है। दूसरा उल्लेखनीय कार्य कनकधारा स्त्रोत को उसके मूल छंद वसंत तिल्लिका/उपेन्द्र वज्रा/रथोद्धता इत्यादि में किया है।

आशा है संशोधित संस्करण आपको पसंद आएगा। आपकी कोई भी सलाह शिरोधार्य है।

सादर नमन।

— सुरेश चौधरी 'इंदु'
हरियाली अमावस्या विक्रम संवत 2080

आदि शंकराचार्य – एक परिचय

जब धर्म का धर्म की संस्कृति का दोहन होने लगा, सनातन संस्कृति एवं उसके ज्ञान को गलत तरीके से स्वयंभू आचार्यों ने परिभाषित करना आरंभ किया तब दक्षिण भारत में मलाबार क्षेत्र में तुंगभद्रा नदी के किनारे श्रृंगभेटी शंकराचार्य का जन्म विक्रम संवत 788 को वैशाख शुक्ल दशमी को में हुआ। जन्मतिथि के बारे में बड़ा भ्रम है। अत्यधिक शोध एवं अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष निकाला, वह अलग से अन्य अध्याय में दे रहा हूँ। 16 वर्ष की अल्पायु में चारों वेद, वेदांग, दर्शन, पुराण आदि से साक्षात्कार इन्होंने कर लिया था।

बालक शंकराचार्य असामान्य मेधावी थे। महादेव शंकर का वरदहस्त उन्हें था तो उनकी जिव्हा में सरस्वती विराजमान थी। तीन वर्ष की उम्र में इनके पिता शिवगुरु का निधन हो गया तब माता आर्याम्बा ने इनका पालन पोषण किया। विपरीत परिस्थितियों के कारण बालक शंकर का बचपन संघर्ष में बीता। बचपन में यज्ञोपवीत के उपरांत गुरु घर में पढ़ने गए। चलते-चलते शंकर मध्यप्रदेश के ओंकारेश्वर पहुँचे, जहाँ उन्हें गुरु के गोविन्द भगवताप्रसाद भट्ट मिले। गुरुदीक्षा के बाद इस किशोर संन्यासी ने पुण्यभूमि भारत की पदयात्रा की। अंत में वाराणासी काशी-विश्वनाथ की पवित्र नगरी में एक धर्म सभा शास्त्रार्थ कर वैदिक धर्म की स्थापना की।

राष्ट्रीय एकात्मता की स्थापना के लिए जगतगुरु शंकराचार्य ने देश के चारों कोनों पर चार धाम तथा द्वादश ज्योतिर्लिंगों की स्थापना की। चार धामों में हिमालय पर बद्रीनाथ, समुद्र किनारे जगन्नाथपुरी, रामेश्वर तथा द्वारिकापुरी स्थापित किए। इन चारों धामों के साथ चार पीठ स्थापित किए। ये चार पीठ हैं-ज्योतिपीठ, गोवर्धनपीठ, शारदा पीठ और श्रृंगेरी पीठ।

आज भी इन पीठों में शंकराचार्य की परंपरा चली आ रही है। काँची में यद्यपि पहली पीठ की स्थापना की थी, परंतु श्रृंगेरी पीठ अधिक प्रसिद्ध है। शंकराचार्य के हाथों उपनिषद नवनीत बन गए, वहीं उनका चिंतन भारतीय संस्कृति की एकता के लिए एक सूत्र बन गया। देश को एकता के लिए सूत्र में पिरोने वाले इस संत का 32 वर्ष की उम्र में अवसान हो गया। आदि शंकराचार्य के रूप में पहचाने जाने वाले सिद्ध पुरुष ने सनातन धर्म की कुरीतियों एवं ग्रंथों के दुरूपयोग को रोकने के लिए ग्रंथों का भाष्य सरल भाषा में किया, यह गुरु शिष्य की परंपरा आज भी चली आ रही है। इस तरह देश में स्थापित चार पीठ के पीठाधीश आज भी सनातन परंपरा के सर्वोच्च धर्म गुरु माने जाते हैं।

शंकराचार्य काशी में रहकर एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में स्नान करने के लिए गंगा के तट पर जा रहे थे। रास्ते में एक स्त्री अपने पति का शव रखकर विलाप कर रही थी। शंकराचार्य ने उससे शव को मार्ग से हटाने के लिए कहा तो उस स्त्री ने कहा कि शव को क्यों नहीं कह देते कि वह हट जाए। शंकराचार्य ने कहा कि शव में हटने की शक्ति नहीं है। तब वह स्त्री यह कहकर अंतर्ध्यान हो गई कि – ''आपके मतानुसार तो शक्ति, निरपेक्ष ब्रह्म ही जगतकर्ता है तो यह शव शक्ति के बिना ज़्यों नहीं हटता ?'' इससे शंकराचार्य को शक्ति का ज्ञान हुआ। तब उन्होंने श्री की उपासना प्रारंभ की और श्रीविद्या के प्रवर्तक के रूप में जाने जाने लगे।

आचार्य शरदचंद्र मिश्र के अनुसार आठवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जब सनातन धर्म विनष्ट होने लगा तो भगवान भोलेनाथ ने सोचा कि भारतवर्ष में एक ऐसे संत की आवश्यकता है, जो वैदिक धर्म को पुन: स्थापित कर सनातन धर्म की रक्षा करे तो उन्होंने अपने अंशावतार के रूप में वैशाख शुज़्ल पंचमी के दिन ब्राह्मण दंपति के घर केरल राज्य के कलाटि ग्राम में जन्म लिया। इनके पिता का नाम शिवगुरु था। पिता ने इस पुत्र का नाम

शंकर रखा। यही शंकर आगे चलकर आदि गुरु शंकराचार्य बने। एक वर्ष की उम्र में ही इनमें देवत्व का गुण आ गया। दो वर्ष की उम्र में माता से पुराणों का ज्ञान प्राप्त कर लिए। पांच वर्ष की उम्र में इन्होंने कनकधारा स्तोत्र की रचना कर गरीब ब्राह्मण की निर्धनता दूर की। बचपन में जब ये गुरुजी के आश्रम में थे तो बाढ़ के पानी को अपने कमंडल में समाहित कर लिया। सात वर्ष की उम्र में समस्त वेदों का ज्ञान प्राप्त कर घर लौट आए। जब शंकराचार्य आठ वर्ष के थे तो माता से संन्यास की आज्ञा मांगी, मां ने मना कर दिया। फिर एक दिन माता के साथ स्नान करने के लिए नदी पर गए। नहाते समय मगरमच्छ ने शंकर को पकड़ लिया। मां रोने-चिल्लाने लगी। इस पर शंकर ने कहा कि यदि आप मुझे संन्यास की आज्ञा दें, तो मगरमच्छ मुझे छोड़ देगा। घबराई मां ने तुरंत संन्यास की आज्ञा दे दी। तब इन्होंने आदि शेषावतार माने जाने वाले गोविन्द भगवत्पाद से दीक्षा ग्रहण की। संन्यास लेने से इनकी पूर्णायु आठ वर्ष से सोलह वर्ष हो गई। गुरु ने इन्हें राजयोग, हठयोग और ज्ञानयोग की शिक्षा दी। कुछ ही समय पश्चात् ये नर्मदा के किनारे से काशीपुरी चले आए। इनके बारे में कहा जाता है कि इन्हें एक दिन गंगा के किनारे सामान्य ब्राह्मण के रूप में वेदव्यास जी से मिले। वेदव्यास ने शंकर से ब्रह्मसूत्र का अर्थ पूछा। दोनों ने आठ दिन तक शास्त्रार्थ किया। अंत में वेदव्यास ने अपना परिचय देकर इन्हें पूर्ण आशीर्वाद दिया और अद्वैतवाद का प्रचार करने का आदेश दिए और साथ ही इनकी उम्र 16 वर्ष से 32 वर्ष होने का आशीर्वाद भी दिए। कहा जाता है कि उस समय विश्व विख्यात न्याय दर्शन के ज्ञानी मण्डन मिश्र से इनका शास्त्रार्थ हुआ था और इन्होंने उनको पराजित किया। कालान्तर में मण्डन मिश्र भी अद्वैत वेदान्त के पोषक बन गए। सनातन धर्म के प्रचार के लिए शंकराचार्य ने अनेक स्थानों का भ्रमण किया। इन्होंने काशी, कुरुक्षेत्र, बद्रिकाश्रम में अन्य मतों के प्रचारकों से एवं

विद्वानों से शास्त्रार्थ किया। इनकी मुलाकात कुमारिल भट्ट से हुई और उन्होंने भी इनके मत को स्वीकर कर लिए। उस समय समस्त भारतवर्ष में बौद्ध धर्म के प्रभाव में था। इनके प्रभाव से पुन: सनातन धर्म की ओर लोगों की रुचि होने लगी। इन्होंने अनेक मंदिर भी बनवाए। पूरे भारत की यात्रा करने के पश्चात् देश के चारों दिशाओं में एक-एक पीठ स्थापित किये, जो पूर्व में पुरीधाम में गोवर्धन मठ, पश्चिम में द्वारकाधाम में शारदा मठ, उत्तर के ज्योर्तिधाम में ज्योतिर्मठ और दक्षिण के रामेश्वरम धाम में श्रृंगेरी मठ के नाम से विख्यात हैं। इन्होंने दो सौ ग्रंथों की रचना की है, जिसमें ब्रह्मसूत्र भाष्य, गीता भाष्य, विवेक चूड़ामणि, उपनिषद भाष्य, प्रबोध सुधाकर, उपदेश साहसी, अपरोक्षानुति, सौन्दर्य लहरी व प्रपंचसार तंत्रम आदि प्रमुख हैं। बड़ा दुख होता है जब इतिहास में केवल राजा महाराजों जैसे - Alexander the Great, Akbar the Great और Ashok the Great पढ़ाया जाता हैं, जब कि ये तीनों सनातन हिंदू धर्म भारत से समाप्त करने के प्रयास में थे। बौद्ध, जैन, सिज़्ख पंथ तो भारत में पैदा हुये। इस्लाम, मुस्लिम आक्रांताओं ने आठ सौ वर्ष और ईसाई धर्म, अंग्रेजों ने दो सौ वर्ष फैलाया पर जगत् गुरू शकंराचार्य और ऐसे ही साधु-संत और विचारकों ने इसकी समय-समय पर रक्षा की। अत: संतों की जय!

फोटो फीचर

कुछ दिनों पूर्व मेरा कालपी जाने का अवसर मिला जो कि कोची एयरपोर्ट से मात्र 7 किलोमीटर दूर है। आदि शंकर से आज तक के सभी शंकराचार्य का क्रमानुसार विवरण है। पट्टिका की फोटो संलग्न कर रहा हूँ। एक चित्र और बड़ा अच्छा लगा वह था आदि शंकर ने किस-किस स्थान का भ्रमण किया उसका विवरण–

ARABIAN SEA

Naimisharanya	C3
Nalanda	D3
Nasik (Panchavati)	B4
Neelkanth	D3
Omkareshwar	B4
Ontimitta (Kothandarama)	B5
Pandharpur	B5
Parli Baijnath	B4
Patna (Pataliputhra)	D3
Peshawar	A1
Poonamallee	C5
Prayag (Allahabad)	C3
Puri	D4
Pushpagiri	C5
Rajahmundry	C5
Ramachandrapurum	C5
Rameswaram	C6
Simhachalam	C5
Somanath	A4
Sonpur	B3
Sri Kalahasti	C5
Srinagar	A2
Sringeri	B5
Srirangam	B6
Srisailam	BC5
Subrahmanya	C6
Swamimalai	BC6
Taxila	A1
Tiruchendur	B6
Thiruchirapalli	B6
Tirupati	C5
Thiruvanaikoil (Jambukeshvaram)	B6
Tiruvidaimarudur	C6
Tiruvotriyur	C5
Trichur	B6
Trivandrum (Ananthasayanam)	B6
Triambak	B4
Tuljapur	B5
Ujjain	B4
Uttar Kashi	B2
Venkatagiri	C5
Vidyalaya (Mahismathi)	B2
Vrindavan	B3

Jyothirlingams
Mokshapuris
Sphatikalingams

Dwaraka	A4
Gaur	D3
Gaya	CD3
Gokarna	AB5
Gudur	C5
Guruvayur	B6
Guwahati (Kamakhya)	D3
Hampi (Virupaksha)	B5
Haridwar	B2
Harihar	B5
Hasthinapur	B2
Joshimath	C2
Jwalamukhi	B2
Kalady	B6
Kanchipuram	C6
Kanyakumari	B7
Kashi (Varanasi)	C3
Kathmandu	D3
Kedarnath	C2
Kollur (Mookambika)	B5
Kudali	B5
Kumbakonam	C6
Kurukshethra	B2
Madurai	B6
Maheshi (Mahismati)	D3
Maheshwar (Mahismati)	B4
Mahur	B4
Mandaleshwar	B4
Mangadu	C6
Mathura	B3
Mayavaram	C6
Mount Kailash	C2
Mylapore	C6
Naimisharanya	C3
Nalanda	D3
Nasik (Panchavati)	B4
Neelkanth	D3
Omkareshwar	B4
Ontimitta (Kothandarama)	B5
Pandharpur	B5
Parli Baijnath	B4
Patna (Pataliputhra)	D3
Peshawar	A1
Poonamallee	C5
Prayag (Allahabad)	C3
Puri	D4
Pushpagiri	C5
Rajahmundry	C5
Ramachandrapurum	C5
Rameswaram	C6
Simhachalam	C5
Somanath	A4
Sonpur	B3
Sri Kalahasti	C5
Srinagar	A2
Sringeri	B5
Srirangam	B6
Srisailam	BC5
Subrahmanya	C6

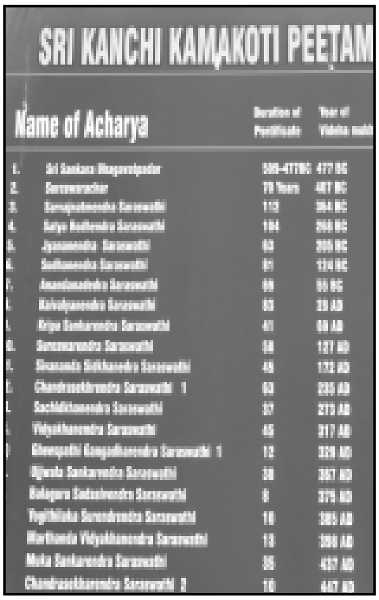
SRI KANCHI KAMAKOTI PEETAM
Name of Acharya

Name of Acharya

वेदांत के प्रणेता आदि शंकराचार्य

आदि शंकराचार्य अद्वैत वेदांत के प्रणेता, मूर्तिपूजा के पुरस्कर्ता, पंचायतन पूजा के प्रवर्तक है। उपनिषदों और वेदांत सूत्रों पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने भारतवर्ष में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिनके प्रबंधक तथा गद्दी के अधिकारी 'शंकराचार्य' कहे जाते हैं। वे चारों स्थान ये हैं- (1) बदरिकाश्रम, (2) श्रृंगेरी पीठ, (3) द्वारिका पीठ और (4) शारदा पीठ। इन्होंने अनेक विधर्मियों को भी अपने धर्म में दीक्षित किया था। ये शंकर के अवतार माने जाते हैं। इन्होंने ब्रह्म सूत्रों की बड़ी ही विशद और रोचक व्याख्या की है। उनके विचारोपदेश आत्मा और परमात्मा की एकरूपता पर आधारित हैं, जिसके अनुसार परमात्मा एक ही समय में सगुण और निर्गुण दोनों ही स्वरूपों में रहता है। स्मार्त संप्रदाय में आदि शंकराचार्य को शिव का अवतार माना जाता है। इन्होंने ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक और छान्दोग्योपनिषद् पर भाष्य लिखा। वेदों में लिखे ज्ञान को एकमात्र ईश्वर को संबोधित समझा और उसका प्रचार तथा वार्ता पूरे भारत में की। उस समय वेदों की समझ के बारे में मतभेद होने पर उत्पन्न चार्वाक, जैन और बौद्धमतों को शास्त्रार्थों द्वारा खण्डित किया और भारत में चार कोनों पर ज्योति, गोवर्धन, श्रृंगेरी एवं द्वारिका आदि चार मठों की स्थापना की। कलियुग के प्रथम चरण में विलुप्त तथा विकृत वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उद्भासित और विशुद्ध कर वैदिक वाङ्मय को दार्शनिक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक धरातल पर समृद्ध करने वाले एवं राजर्षि सुधन्वा को सार्वभौम सम्राट यापित करने वाले चतुराम्नाय-चतुष्पीठ संस्थापक नित्य तथा नैमित्तिक युग्मावतार श्रीशिवस्वरुप भगवत्पाद शंकराचार्य की अमोघदृष्टि तथा अद्भुत कृति

सर्वथा स्तुत्य है। कलियुग की अपेक्षा त्रेता में तथा त्रेता की अपेक्षा द्वापर में, द्वापर की अपेक्षा कलि में मनुष्यों की प्रज्ञा शक्ति तथा प्राण शक्ति एवं धर्म और आध्यात्म का ह्रास सुनिश्चित है। यही कारण है कि कृतयुग में शिवावतार भगवान दक्षिणामूर्ति ने केवल मौन व्याख्यान से शिष्यों के संशयों का निवारण किया। त्रेता में ब्रह्मा, विष्णु और शिव अवतार भगवान दत्तात्रेय ने सूत्रात्मक वाक्यों के द्वारा अनुगतों का उद्धार किया। द्वापर में नारायणावतार भगवान कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने वेदों का विभाग कर महाभारत तथा पुराणादि की एवं ब्रह्मसूत्रों की संरचनाकर एवं शुक लोमहर्षणादि कथाव्यासों को प्रशिक्षितकर धर्म तथा अध्यात्म को उज्जीवित रखा। कलियुग में भगवत्पाद श्रीमद् शंकराचार्य ने भाष्य, प्रकरण तथा स्तोत्रग्रन्थों की संरचना कर, विधर्मियों–पन्थायियों एवं मीमांसकादि से शास्त्रार्थ, परकायप्रवेशकर, नारदकुण्ड से अर्चाविग्रह श्री बदरीनाथ एवं भूगर्भ से अर्चाविग्रह श्रीजगन्नाथ दारुब्रह्म को प्रकटकर तथा प्रस्थापित कर, सुधन्वा सार्वभौम को राजसिंहासन समर्पित कर एवं चतुराम्नाय– चतुष्पीठों की स्थापना कर अहर्निश अथक परिश्रम के द्वारा धर्म और आध्यात्म को उज्जीवित तथा प्रतिष्ठित किया। व्यासपीठ के पोषक राजपीठ के परिपालक धर्माचार्यों को श्रीभगवत्पाद ने नीतिशास्त्र, कुलाचार तथा श्रौत–स्मार्त कर्म, उपासना तथा ज्ञानकाण्ड के यथायोग्य प्रचार–प्रसार की भावना से अपने अधिकार क्षेत्र में परिभ्रमण का उपदेश दिया। उन्होंने धर्मराज्य की स्थापना के लिये व्यासपीठ तथा राजपीठ में सद्भावपूर्ण संवाद के माध्यम से सामंजस्य बनाये रखने की प्रेरणा प्रदान की। ब्रह्मतेज तथा क्षात्रबल के साहचर्य से सर्वसुमंगल कालयोग की सिद्धि को सुनिश्चित मानकर कालगर्भित तथा कालातीतदर्शी आचार्य शंकर ने व्यासपीठ तथा राजपीठ का शोधनकर दोनों में सैद्धान्तिक सामंजस्य साधा। *(स्रोत : अज्ञात)*

❍❍❍

आदि शंकर के जन्मतिथि के भरम का निवारण

भारतीय इतिहास भ्रम और भ्रान्तियों से भरा पड़ा है। इसका मुख्य कारण रहा है भारतीय ग्रंथों की, जो मुख्य धरोहरें थी उनको नष्ट कर देना, तत्पश्चात श्रुति से स्मृति से जिसने जो गढ़ लिया और जिसे जो उचित लगा उसे स्वीकार कर लिया। ऐसा ही कुछ आदि शंकराचार्य के बारे में कहा जाता रहा है। मुझे याद है जब प्रधानमंत्री मोदी जी ने आदि शंकर को 2500 वर्ष पूर्व का बताया तो विरोधी दलों ने खूब मजाक किया। वास्तविकता यह है वर्तमान इतिहासकार जिन शंकराचार्य को 788-820 ई. का बताते हैं, वे वस्तुत: कामकोटि पीठ के 38वें आचार्य श्री अभिनवशंकर जी थे। वे 787 से 840 ईसवी सन् तक विद्यमान थे। वे चिदम्बरम वासी श्रीविश्वजी के पुत्र थे। इन्होंने कश्मीर के वाक्पतिभट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित किया और 30 वर्ष तक मठ के आचार्य पद पर रहे। सभी सनातन धर्मावलम्बियों को अपने मूल आचार्य के विषय में ज्ञान होना चाहिए। इस विषय में यह ध्यातव्य है कि पुरी के पूज्य वर्तमान शंकराचार्य जी ने सभी प्रमाणभूत साक्ष्यों को भारत सरकार को सौंपकर उन प्रमाणों के आलोक में ऐतिहासिक अभिलेखों में संशोधन का आग्रह भी किया है!

शारदा पीठ में लिखा है—

युधिष्ठिर शके 2631 वैशाखशुक्लापंचम्यां श्रीमच्छछंकरावतार:।

—तदनु 2663 कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां—
श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादा—
निजदेहेनैव—निजधाम प्राविशन्निति।

अर्थात् युधिष्ठिर संवत् 2631 में वैशाखमास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को श्रीशंकराचार्य का जन्म हुआ और युधि. सं. 2663 कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को देहत्याग हुआ। [युधिष्ठिर संवत् 3139 B.C. में प्रवर्तित हुआ था]

राजा सुधन्वा के ताम्रपत्र का लेख द्वारिकापीठ के एक आचार्य ने 'विमर्श' नामक ग्रन्थ में प्रकाशित किया है—

निखिलयोगिचक्रवर्ती श्रीमच्छंकरभगवत्पादपद्मयोर्भ्र मरायमाणसुधन्वनो मम सोमवंशचूडामणियुधिष्ठिरपारम्पर यपरिप्राप्तभारतवर्षस्यांजलिबद्धपूर्वकेयं राजन्यस्य विज्ञप्ति......युधिष्ठिरशके 2663 आश्विन शुक्ल 15।

एक अन्य ताम्रपत्र संस्कृतचंद्रिका (कोल्हापुर) के खण्ड 14, संख्या 2-3 में प्रकाशित हुआ था। उसके अनुसार गुजरात के राजा सर्वजित् वर्मा ने द्वारिकाशारदापीठ के प्रथम आचार्य श्री सुरेश्वराचार्य (पूर्व नाम-मंडन मिश्र) से लेकर 29वें आचार्य श्री नृसिंहाश्रम तक सभी आचार्यों के विवरण हैं। इसमें प्रथम आचार्य का समय 2649 युधि. सं. दिया है।

सर्वज्ञसदाशिवकृत ''पुण्यश्लोकमंजरी'' आत्मबोध द्वारा रचित ''गुरुरत्नमालिका'' तथा उसकी टीका ''सुषमा'' में कुछ श्लोक हैं। उनमें एक श्लोक इस प्रकार है—

तिष्ये प्रयात्यनलशेवधिबाणनेत्रे, ये नन्दने दिनमणावुदगध्वभाजि।
रात्रोदितेरुडुविनिर्गतमंगलग्नेत्याहूतवान् शिवगुरुः स च शंकरेति॥

अर्थ—अनल=3, शेवधि=निधि=9, बाण=5, नेत्र=2, अर्थात् 3952।

'अंकानां वामतोगति:' इस नियम से अंक विपरीत क्रम से रखने पर 2593 कलिसंवत् बना। [कलिसंवत् 3102 B.C. में प्रारंभ हुआ] तदनुसार 3102-2593=509 B.C. में आदि शंकराचार्य जी का जन्म वर्ष निश्चित होता है।

कुमारिल भट्ट जो कि शंकराचार्य के समकालीन थे, जैन ग्रंथ जिनविजय में लिखा है—

ऋषिर्वारस्तथा पूर्ण मर्त्याक्षौ वाममेलनात्।
एकीकृत्य लभेतांकःक्रोधीस्याज्ञत्र वत्सरः॥
भट्टाचार्यस्य कुमारस्य कर्मकाण्डैकवादिनः।
ज्ञेयः प्रादुर्भवस्तस्मिन् वर्षे यौधिष्ठिरे शके।।

जैन लोग युधिष्ठिरसंवत् को 468 कलिसंवत् से प्रारंभ हुआ मानते हैं।

श्लोकार्थ—ऋषि=7, वार=7, पूर्ण=0, मर्त्याक्षौ=2, 7702।

'अंकानांवामतोगति' 2077 युधिष्ठिर संवत् आया अर्थात् 557 ख्रष्ट. कुमारिल 48 वर्ष बड़े थे => 509 B.C. श्रीशंकराचार्य जी का जन्मवर्ष सिद्ध होता है।

'जिनविजय' में शंकराचार्यजी के देहावसान के विषय में लिखा है—

ऋषिर्बाणस्तथा भूमिर्मर्त्याक्षौ वांममेलनात्।
एकत्वेन लभेतांकस्ताम्राक्षस्तत्र वत्सरः॥

2157 यु. सं. (जैन) 476 B.C. में आचार्य शंकर ब्रह्मलीन हुए!

बृहत्शंकरविजय में चित्सुखाचार्य (शंकराचार्य जी के सह अध्यायी) ने लिखा है—

षड्विंशकेशतके श्रीमद् युधिष्ठिरशकस्य वै।
एकत्रिंशेऽथ वर्षेतु हायने नन्दने शुभे॥
. . . . .
प्रासूत तन्वंसाध्वी गिरिजेव षडाननम्।।

यहाँ युधिष्ठिर शक 2631 में अर्थात् 508 ई.पू. में आचार्य का जन्म संवत् बताया गया है।

अत: आज आदिशंकर के प्रकटोत्सव पर हम कुछ भूल सुधार करें। आदि शंकर के बारे में बहुत कुछ लिखा हूँ।

यूरोपीय और # वामपंथी इतिहासकारों ने # काञ्ची...कामकोटि...मठ के 38वें शंकराचार्य # अभिनव # शंकर (788-840 ई.) को आद्य शंकराचार्य के रूप में प्रचारित किया।

अभिनव शंकर 788 ई. में कांची कामकोटि पीठ पर शंकराचार्य के रूप में विराजमान हुए थे। उनके और आद्य शंकराचार्य का जीवनचरित इतना मेल खाता है कि अभिनव शंकर को ही आद्य शंकराचार्य कहकर प्रचारित किया गया। अभिनव शंकर का जन्म # चिदम्बरम् में हुआ था। आद्य शंकर का जन्म कालड़ी में हुआ था, लेकिन एक परंपरा जन्मस्थान चिदम्बरम् मानती है। अभिनव शंकर और आद्य शंकर ने भारत की अत्यधिक यात्राएँ कीं, दोनों # हिमालय गए # दत्तात्रेय-गुफा में प्रविष्ट हुए, फिर उनका कुछ पता न चला। इसी आधार पर 8वीं शती में हुए अभिनव शंकर को आद्य शंकराचार्य कहकर प्रचारित किया गया। इस दृष्टि से प्रचलित इतिहास में लगभग 1,300 वर्ष की त्रुटि दृष्टिगत होती है। इस भूल से

भारतीय ऐतिहासिक # कालानुक्रम # Chronology में एक बहुत बड़ी गलती हुई। आचार्य शंकर के # काल को 1,300 वर्ष पीछे ले जाने से यह सिद्ध होता है कि # भगवान-बुद्ध # अश्वघोष # नागार्जुन आदि की प्रचलित— पाश्चात्य लेखकों द्वारा सुझाई तथाकथित तिथियाँ—भी अशुद्ध हैं।

आद्य-शंकर की तिथि का निर्धारण किए बिना भारतीय इतिहास त्रुटिपूर्ण कालक्रम से मुक्त नहीं हो सकता है। वस्तुत: भारतीय ऐतिहासिक कालानुक्रम में # महर्षि-वेदव्यास # बुद्ध # चाणक्य और # शंकर की तिथियाँ वे महत्वपूर्ण पड़ाव हैं, जहाँ से हम इतिहास की अन्य बहुत-सी तिथियाँ सुनिश्चित कर सकते हैं और # महाभारत, उससे पूर्व # वाल्मीकीय # रामायण तथा उससे भी पूर्व # वेद का सही-सही काल-निर्धारण कर सकते हैं। विगत दशकों में # भारतीय-इतिहास में कालानुक्रम-विषयक अनेक नयी खोजें हुई हैं। ये खोजें आचार्य शंकर की तिथि को संशोधित किए जाने की मांग कर रही हैं।

आदि शङ्कराचार्य जी ने चार पीठ स्थापित किये।

1. उत्तर दिशा में बदरिकाश्रम में ज्योर्तिपीठ...
   स्थापना-युधिष्ठिर संवत् 2641-2645
2. पश्चिम में द्वारिका शारदा पीठ - यु.सं. 2648
3. दक्षिण में शृङ्गेरी पीठ - 2648 Y.S.
4. पूर्व दिशा जगन्नाथ पुरी गोवर्द्धन पीठ 2655 Y.S.

आदि शंकर जी अंतिम दिनों में कांची कामकोटि पीठ 2658 यु.सं. में निवास कर रहे थे।

दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में कुम्भकोणम् नाम का एक नगर है; जिसे मन्दिरों का नगर कहा जाता है। 17वीं शताब्दी में जब मराठों का

विजय का पताका भारतवर्ष के कई बड़े राज्यों में लहलहा रहा था तो यहां भी उन्होंने अनेक मन्दिरों का निर्माण किये।

वहां आचार्य शङ्कर के परंपरा का एक मठ है, जिसके अनुसार भगवान् शंकर ने पांच बार अवतार धारण किया।

कांची मठ के गुरु परंपरा अनुसार भी प्रथम बार शंकर जी ईसा से 509-8 या 482 या 476 वर्ष पूर्व कालटी में अवतरित हुए। यह आद्य शंकर या कालटी शंकर कहलाये। इन्होंने प्रस्थानत्रयी, विष्णुसहस्रनाम आदि पर भाष्य किया।

दूसरे जो हुए, उनका नाम कृपाशंकर था। यह ईस्वी संवत् 26 से 69 तक रहे। यह कामकोटि के सातवें या आठवें मठाधीश हुए। इन्हें षणमत स्थापनाचार्य के नाम से कहा गया। इन्होंने गाणपत्य, सुब्रह्मण्य, शाक्त, शैव, वैष्णव तथा सौर इन छह वैदिक उपासनाओं का प्रचार किया। इन्होंने विश्वरूप को श्रृंगेरी में स्थापित किया। यह 43 वर्ष तक रहे।

तीसरे उज्ज्वल शंकर; इनका समय ई. 329 से 367 तक है। यह 38 वर्ष रहे। यह कामकोटि के सोहलवें शंकराचार्य थे। केरल के राजा कुलशेखर इनके शिष्य थे।

चौथे मूक शंकर या मूकेन्द्र शंकर के नाम से विख्यात हुए।

यह कामकोटि के अठारवें या बीसवें आचार्य हुए। यह ईस्वी संवत् 398 से 437 या 439 वर्ष तक रहे।

पांचवें अभिनव विद्याशंकर तीर्थ या धीर शंकर या चिदम्बर शंकर के नामों से विख्यात हुए। इनका जन्म सन् 788 में हुआ था। कुछ लोगों ने इन्हीं को भ्रांति से आद्य शंकर मान लिया। 'आनंद गिरीय' दिग्विजय में इनका जीवन वृत्तांत मिलता है। यह भगवान शंकर के पांच चंद्रमौलीश्वर लिंग लाये थे। इनके संबंध में 'शिव रहस्य' के सोहलवें अध्याय में साठवां श्लोक मिलता है 'गुरुरत्न माला' की सुषमा टिका, 'पुण्य श्लोकमंजरी'

तथा 'परमिला', 'आदि शंकराचार्य अभ्युदय', 'पतंजलि चरित' आदि ग्रन्थों में इनका वर्णन हुआ है।

अनेकों दिग्विजयों में जिनमें 'माधवीय दिग्विजय', 'व्यासचलीय' आदि आते हैं, उनमें इन्होंने कैलाश में जाकर पांच मौलीश्वर तथा 'सौंदर्य लहरी' ग्रंथ प्राप्त किये; इस प्रकार इनके संबंध में मत पाया जाता है।

दक्षिण के ही स्कंदपुर के हस्तलिखित ग्रंथ के अनुसार आचार्य का जन्म सन 178 लिखा है।

श्रृंगेरी के विद्वानों के अनुसार श्री शंकराचार्य को 1600 वर्ष हो चुके हैं। कुछ संप्रदाय के लोग 1200 वर्ष मानते हैं।

भोज प्रबंध के अनुसार 800 या 900 वर्ष पूर्व शंकराचार्य का जन्म हुआ।

शिव रहस्य के 9वें अंशानुसार आचार्य को 2080 वर्ष हो चुके। शंकर जी कहते हैं 'हे देवी! सारस्वत, गौड़, मिश्र, कर्नाटकी ब्राह्मण, विंध्याचल के उज़र के वासी ब्राह्मण शास्त्रार्थ करने में दक्ष होंगे।

कलि में जैन, बौद्ध, चार्वाक, मीमांसक वेद के अर्थ का अनर्थ करेंगे।

पूर्वमीमांसक कर्म को ही मुक्ति का साधन बताएंगे।

हे महादेवी! इनको उखाड़ फेंकने के लिए केरल के शशल ग्राम में मेरा अंश ब्राह्मण पत्नी के गर्भ से शंकर के रूप में अवतरित होगा।'

'श्रृंगेरी गुरु परंपरा' ग्रंथ में लिखा है कि विक्रम संवत15, पार्थिव वैशाख शुक्ल तृतीया को जन्म हुआ तथा विक्रम संवत 22 में संन्यास ग्रहण किया। श्रृंगेरी मठ के पं. कृष्णलाल और पं. गोविंद राम का कथन है कि विक्रम संवत 75 में शंकराचार्य का जन्म हुआ।

शारदा मठ के परंपरा के अनुसार भगवान भाष्यकार का जन्म युधिष्ठिर

संवत 2631, वैशाख शुक्ल पंचमी को हुआ। यही मत युक्तियुक्त तथा माननीय है।

कुछ विद्वानों ने कलि का आरंभ ईसा से 3102 वर्ष पूर्व माना है। युधिष्ठिर संवत इससे भी 36 या 37 वर्ष पुराना है। अत: युधिष्ठिर संवत ईसा से 3138 या 3139 वर्ष पूर्व सिद्ध हुआ।

महाभारत तथा भागवत के अनुसार जिस दिन से भगवान श्रीकृष्ण धराधाम को परित्याग कर परमधाम को गये; उसी दिन कलि आरंभ हुआ।

महाभारत के स्त्री पर्व में कथा आती है कि जब गांधारी तथा धृतराष्ट्र को पता चला कि श्रीकृष्ण ने कूटनीति से भीमसेन के द्वारा मेरे सौ पुत्र मरवा दिये हैं, तब पुत्रशोक से संतप्ता गांधारी ने भगवान को शाप दिया– ''जैसे मेरे वंश का विनाश हुआ है, आज से 36 वर्ष बाद वैसे ही तुम्हारे भी वंश का नाश होगा।''

इस कथा से सिद्ध होता है कि महाभारत युद्ध की समाप्ति पर युधिष्ठिर राजगद्दी पर बैठे, उसी दिन से उनका संवत आरंभ हुआ। उपरोक्त श्राप अनुसार 36 या 37 वर्ष बाद कलियुग आरंभ होता है।

युधिष्ठिर संवत 3631 से लेकर 2663 तक शंकराचार्य का कार्यकाल रहा; यह शुषमा टिका तथा प्राचीन दिग्विजयों से सिद्ध है।

'आम्नाय' का अर्थ होता है 'वेद' और 'आम्नाय पीठ' का अर्थ होता है 'वैदिक पीठ'।

जगतगुरु भगवान श्री आदि शंकराचार्य जी ने भारत की चार दिशाओं में चार 'आम्नाय पीठों' की स्थापना की।

जिसे हम 'वैदिक पीठ' या 'शंकराचार्य मठ' भी कहते हैं।

इन आम्नाय वैदिक पीठों की स्थापना का उद्देश्य था वेदों, जगतगुरु आचार्य परंपरा, सनातन धर्म और व्यासपीठ का संरक्षण, संवर्धन करना

तथा वेदों को सांस्कृतिक-वैचारिक युद्धों, विध्वंसक आक्रमणों, आघातों, हानि से बचाना तथा सुरक्षित रखना।

आचार्य शंकर ने चार आम्नाय वैदिक पीठों की स्थापना कर प्रत्येक वैदिक मठ को एक वेद प्रदान किया और उन मठों के कर्तव्य, उद्देश्य, उत्तरदायित्वों का निर्धारण करने हेतु इन मठों के संविधान की संरचना की जिसके अनुसार प्रत्येक वैदिक मठ को जो वेद प्रदान किया गया है वह मठ उस वेद और उसकी शखाओं का पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन, अनुसंधान, शोध करेगा तथा उस वेद का प्रचार, प्रसार, विस्तार, संरक्षण, संवर्धन करेगा।

आचार्य शंकर द्वारा स्थापित चतुराम्नाय चतुष्पीठों (वैदिक मठों) के स्थानों और वेदों का परिचय-विवरण इस प्रकार है।

1. आचार्य शंकर ने भारत की उत्तर दिशा में 'श्री ज्योर्तिमठ' की बद्रिनाथ, उत्तराखण्ड में स्थापना की तथा इस आम्नाय पीठ (वैदिक मठ) को 'अथर्ववेद' प्रदान किया, इसलिए इसे 'अथर्ववैदिय उत्तराम्नाय श्री ज्योर्तिमठ' कहा जाता है।
2. आचार्य शंकर ने भारत की पश्चिम दिशा में श्री शारदा मठ (कालिका मठ) की द्वारका, गुजरात में स्थापना की तथा इस मठ को 'सामवेद' प्रदान किया, इसलिए इसे 'श्री सामवैदिय पश्चिाम्नाय श्री शारदा मठ' कहा जाता है।
3. जगतगुरु आदि शंकराचार्य जी ने भारत की दक्षिण दिशा में श्री शृंगेरी मठ की स्थापना शृंगगिरी, कर्नाटक में की तथा इस आम्नाय वैदिक पीठ को 'यजुर्वेद' प्रदान किया, इसलिए इस मठ को 'श्री यजुर्वेदिय दक्षिणाम्नाय शृंगेरी मठ' कहा जाता है।

4. आचार्य शंकर ने भारत की पूर्व दिशा में बंगसागर के तट पर पुरी, उड़ीसा में 'श्री गोवर्धन मठ' की स्थापना की तथा इस आम्नाय वैदिक पीठ को 'ऋगवेद' प्रदान किया, इसलिए इसे 'ऋगर्वैदिय पूर्वाम्नाय श्री गोवर्धन मठ' कहा जाता है।

वेदों, व्यासपीठ और सनातन धर्म को संगठित, सशक्त, सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान कर आचार्य शंकर ने अपने अवतार का प्रयोजन पूर्ण किया। *(स्रोत : अज्ञात)*

मंडन मिश्र

आदि शंकराचार्य के समकालीन मंडन मिश्र अद्वेत, वेदांत एवं मीमांसा के शीर्षस्थ ज्ञाता माने जाते रहे हैं, वे कुमारिल भट्ट के शिष्य थे एवं भृतहरि की परंपरा के आचार्य कहे गए हैं। मंडन मिश्र के काल के साथ आचार्य शंकर के काल पर भी दुविधा है, चारों-मठों के शिलालेखों में युधिष्टर युग का वर्णन है, उसके अनुसार उनका काल ईसा पूर्व 509 वर्ष है, जबकि पाश्चात्य इतिहासकारों ने आचार्य शंकर का जन्म सन 788 में बताया है।

राजा जनक के पूर्वज मिथि के नाम से बने मिथिला राज्य के महिषी नामक ग्राम में रहते थे, उनके ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। राजा जनक के समय से ही मिथिला वैदिक, अध्यात्मिक एवं धार्मिक शास्त्रार्थ व चर्चाओं का केंद्र था। जब आदि शंकराचार्य ने अद्वेतवाद की लौ संपूर्ण भारतवर्ष में जलाने की ठानी तो वे भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े। घूमते-घूमते जब मिथिला की तरफ बढ़े तो उनका मन वेदांत के समग्र प्रसार हेतु मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ करने को मन हो उठा।

आचार्य शंकर ने माहिष्मती नगरी में जाकर पूछा कि पंडितप्रवर मंडन मिश्र कहां रहते हैं?

स्त्रियां जल भरने जा रही थीं, समझ गयीं कोई नवआगन्तुक है।

उन्होंने निम्नलिखित श्लोक में शंकर को उत्तर दिया—

जगदध्रुवंस्यात जगदध्रुवंस्यात कीरांगना यत्र गिरं गिरन्ति
द्वारस्थ-नीडान्तर-सन्निरुद्धा, जानीहि तन्मंडन-पंडितौकः।

स्वतःप्रमाणं परतःप्रमाणं कीरांगना यत्र गिरं गिरन्ति।
द्वारस्थ-नीडान्तर-सन्निरुद्धा, जानीहि तन्मंडन-पंडितौकः।

हे पथिक! जिस दरवाजे पर टंगे हुए पिंजडों में विद्यमान मैनाएं चहक-चहक चर्चा कर रही हों कि जगत नश्वर है या अनश्वर है, जिस दरवाजे पर टंगे हुए पिंजडों में विद्यमान मैनाएं शास्त्रार्थ कर रहीं हों कि वेद स्वतः प्रमाण हैं या इन्हें किसी अन्य प्रमाण की जरूरत है, समझ लेना कि पंडितप्रवर मंडन मिश्र यहीं रहते हैं।

जिस प्रकार चन्दन को पहचान बताने कि आवश्यकता नहीं होती, उसकी खुशबू ही उसकी पहचान होती है। पंडित मंडन मिश्र के पांडित्य की खुशबू चहुँ ओर फैली थी। आचार्य शंकर ने पहुँच कर धर्मसभा बुलवाई एवं शास्त्रार्थ प्रारंभ किया, तब प्रश्न हुआ की निर्णायक कौन हो जो कम से कम इन दो महान ज्ञानियों के बराबर का ज्ञानी हो। तब पंडित मंडन मिश्र की धर्मपत्नी भारती (कुछ लोग इनका नाम सरस्वती देवी भी बताते हैं) का चयन किया गया। शास्त्रार्थ 16 दिन चला, अंतिम समय भारती को आवश्यक कार्यवश कहीं जाना पड़ गया और शत्रार्थ जारी था, तब भारती ने दोनों के गले में एक-एक पुष्प माला डाल दी, जब वे वापस आयीं तब तक शास्त्रार्थ पूरा हो चुका था, निर्णय देना था। भारती ने शंकराचार्य को जयी घोषित किया, सब आश्चर्य में रह गए। पूछा देवी आप तो अंत में थी नहीं, अतः आपने कैसे निर्णय लिया। भारती ने कहा-व्यक्ति का दुश्मन क्रोध होता है, जब मंडन मिश्र हार रहे थे तब उन्हें यह अहसास हो चला था एवं स्वयं पर क्रोध आने लगा था और क्रोध की ज्वाला से दग्ध खिले पुष्प शुष्क हो चले, जबकि शंकराचार्य के गले की माला के पुष्प वैसे ही ताजा थे। अतः निर्णय में कोई दोष नही है। भारती की विद्वतापूर्ण बात सुन संपूर्ण सभा ने आशीर्वाद दिया एवं शंकर को विजयी बताया।

तभी भारती ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पत्नी को अर्धांगनी कहा गया है एवं हम अर्ध–नारीश्वर की मान्यता को मानते हैं। अत: शंकराचार्य अभी आधे विजयी हुए हैं, उन्हें मुझसे शास्त्रार्थ करना होगा।

आदिशंकर ने यह चुनौती स्वीकार की, कई दिनों तक चले शास्त्रार्थ में जब भारती डगमगाने लगी तब उसने शंकर से विवाहित पति–पत्नी के अभिन्न रिश्तों के सन्दर्भ में प्रश्न किया, शंकर ने कहा मैं व्यवहारिक जबाब न दे पाउँगा, क्यूंकि मैंने आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है एवं शास्त्रार्थ का प्रथम नियम है कि अव्यवहारिक उज़्र कोई न दे।

इस प्रकार भारती ने शास्त्रार्थ जीत लिया एवं मंडन मिश्र को शिष्य होने की शर्त से बचा लिया। परन्तु मंडन मिश्र आचार्य शंकर से इतने प्रभावित हुए कि वे स्वयं उनके शिष्यवत वैदिक सनातन धर्म का प्रसार करने लगे, कांचीपुरम के दूसरे शंकराचार्य के रूप में भी स्थापित हुए। (यह भज गोविन्दम नामक आचार्य शंकर की रचना में उधृत शिष्यों के नाम से पता चलता है, पर कुछ लोग उस मंडन मिश्र को अन्य मंडन मिश्र बताते हैं) वैदिक काल में जहां गार्गी, मैत्रीय आदि विदुषी महिलाओं का वर्णन मिलता है, वहीं कलिकाल में भारती का, यह सिद्ध करने के लिए प्रयाप्त है कि प्राचीन समय में नारी का भारतीय संस्कृति में ज़्या स्थान तथा महत्व था।

— सुरेश चौधरी 'इन्दु'

❍❍❍

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित कनकधारा स्त्रोत

देवादिदेव की दया से आदि शंकराचार्य द्वारा रचित कनकधारा स्त्रोत के संस्कृत के श्लोकों का हिन्दी काव्य में उन्हीं छंदों में अनुवाद करने का प्रयास किया है, जिनमें मूल श्लोक हैं।

श्लोक 1 से 11, 16, 19 वसंत तिल्लिका
श्लोक 12 13 14 15 उपेंद्र वज्रा
श्लोक 17 रथोद्धता
श्लोक 18 पुष्पितग्रा
श्लोक 20, 21 वर्णिक

॥ श्री कनकधारा स्तोत्र ॥

अङ्ग हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥1॥

श्री अंग प्रीति हरि सङ्ग सुशोभती है
ज्यूँ भृंग आश्रय तमा तरु खोजती है
ऐश्वर्य धूरि धन धूसर दास जाँकी
काहे विलम्ब अब दृष्टि न कृपा माँ की

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥2॥

मुग्धा मुरारि मुख प्रेम प्रतीक आती
ज्यों भ्रामरी शतदलों पर मंडराती
लज्जा समेट फिर लौट न दृष्टि लेवे
लक्ष्मी समुद्र तनुजा धन धान्य देवे

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष-
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध-
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥3॥

देवेंद्र वैभव विलास रमा करे है
आनंद ले हरि मुरारि प्रसन्न से हैं
नीलाब्ज बीज सम सुंदर आप पे माँ
आधे खुले नयन दृष्टि कृपा पड़े माँ

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥4॥

ऐश्वर्य विष्णु प्रिय लोचन दे खिले से
भौं डाल प्रेमवश देख रहै खुले से
वे निर्निमेष दृग श्रील मुकुंद देखें
आनंद कंद निरखे तिरछे हुए वे

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥5॥

वक्षस्थ कौस्तुभद मंडित श्री प्रभो के
हारावली सम सुशोभित नील ओ के
कामप्रदा भगवती मुझको कृपा दो
कल्याण हे कमल कुंजन वासिनी हो

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥6॥

काली घटा चमक दामिनि ज्यूँ मिले है
श्री विष्णु वक्ष स्थल वंश भृगो खिले हैं
माता समस्त जग की जननी नमस्ते
कल्याण आप कमला कर दें नमस्ते

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥7॥

कन्या समुद्र लख मंथर मन्द हावी
अर्धन्मिलीत जिनकी नजरें प्रभावी
श्री विष्णु का हृदय मंगल काम पाएं
श्री विष्णु प्रेयसि वही नजरें मिलाएं

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-
मस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥8॥

माँ मेघ रूपमयि नेत्र दया दिखाएं
दुष्कर्मरूप यह घाम हवा हटाये
मैया विषाद मुझ दीन पड़ा न देखो
मैं आज चातक कृपा जलधार सींचो

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥9॥

पद्मासना कमल गर्भ समान लाये
श्रीकांति दृष्टि मुझको मनचाह आये
बुद्धिप्रदान न विशिष्ठ न शिष्ट होते
माँ प्रीतिपात्र बन दृष्टि दया सँजोते

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥10॥

शाकम्भरी शिव प्रिया स्थित सृष्टि शक्ते
लीला करे विरत ब्रह्म समान भक्ते
लक्ष्मी प्रिया चिर युवा भगवान की है
लक्ष्मी नमः प्रलय केलि यहां न की है

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥11॥

माँ कर्म प्राप्य श्रुति रूप प्रदान जाना
माँ सिंधु रूप रति रम्य नमोस्तु माना
शक्ते नमोस्तु शत पत्र निवास है जो
विष्णुप्रिया नमन पुष्टि स्वरूप हैं जो

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥12॥

उपेंद्र वज्रा

प्रणाम पद्मा कमला रमा को
प्रणाम श्रीदुग्ध समुद्र रहे जो
प्रणाम चंद्रामृत अग्रजा को
प्रणाम नारायण वल्लभा को

नमोऽस्तु हेमाम्बुज पीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डल नयिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि दयापरायै
नमोऽस्तु शारङ्गयुध वल्लभायै ॥13॥

प्रणाम स्वर्णाम्बुज पीठ धात्री
प्रणाम भूमण्डल राज नेत्री
प्रणाम देवों पर हो दया माँ
प्रणाम सारंग रण वल्लभा को

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि * संस्थितायै।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥14॥

प्रणाम देवी भृगु पाद वाले
प्रभूत वक्षस्थल संस्थिता माँ
प्रणाम पद्मासन वासिता माँ
प्रणाम दामोदर प्रेयसी माँ

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै ॥15॥

प्रणाम कांता कमलाक्ष की हे
प्रणाम माँ सृष्टि रचैयिता हे
प्रणाम नंदात्मज वल्लभा माँ
प्रणाम देवादि सु पूजिता माँ

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥16॥

पद्मादृशा नयन इन्द्रिय रूप मैया
संपत्ति दान करने पद पूजिता माँ
आनंद दायक समर्थ प्रभुत्व दात्री
माँ प्राप्त हो चरण पूजन का सदा ही

रथोद्धता छंद

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसै-
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥17॥

माँ कृपा सब रहे उपासना
पूजते हम विभूति कामना
आपके भजन प्राण से करूँ
विष्णु प्रेयसि भजूँ मनो धरूँ

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरिप्रसीद मह्यम्॥18॥

पुष्पिताग्रा

कमल वन निवास इंदिरा का
धवल सदा परिधान गन्ध माला
भगवति हरि वल्लभा प्रदाता
त्रिभुवन वैभव देवि हर्ष दाता

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गी।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥19॥

श्री अंग कुम्भ जल हेम गिरा बताया
गंगा बहे गगन निर्मल नीर आया
संपूर्ण लोक प्रभु की गृहणी नमस्ते
लक्ष्मी सुता जलधि क्षीर समुद्र हस्ते

कमले कमलाक्षवल्लभे
त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥20॥

कमला कमलाक्ष वल्लभी
निर्धन में निर्धन मैं संरक्षण आ करो
करुणा उमड़े तरंग सी
देख कटाक्षों सह माँ कल्याण आ करो

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमा।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥21॥

प्रणाम वेदन त्रय वेद आप हो
नमोस्तु वैष्णवि जननी सदा अहो
महान ज्ञान गुण निधान भाग्य श्री
सु विज्ञ उत्सुक रहते मनोज्ञ श्री

इस प्रकार श्रीमत् शंकराचार्य रचित कनकधारा स्तोत्र संपूर्ण हुआ।

श्री जगन्नाथ अष्टकम

श्री जगन्नाथ अष्टकम की रचना आदि शंकराचार्य ने भगवान जगन्नाथ की पुरी यात्रा के दौरान उनकी स्तुति में की थी। पवित्र जगन्नाथ अष्टकम का ध्यानपूर्वक पाठ करने का गुण ऐसा है कि, व्यक्ति निष्पाप और शुद्ध हृदय का हो जाता है और विष्णुलोक में प्रवेश प्राप्त करता है। इस कविता में, शंकराचार्य जगन्नाथ को कृष्ण के रूप में देखते हैं, गोपिकाओं द्वारा पूजे जाते हैं और विष्णु के रूप में, सभी डेमी देवताओं द्वारा सेवा की जाती है।

वह प्रार्थना करता है कि जगन्नाथ स्वामी, जो अपने शक्तिशाली भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ महान समुद्र के तट पर सुनहरी नीलाचल पहाड़ी पर एक महल में निवास करते हैं और सभी देवताओं द्वारा पूजे जाते हैं, उनकी दृष्टि का उद्देश्य है। रथ पर यात्रा करते समय हर प्रगति पर ब्राह्मणों द्वारा उनकी पूजा-अर्चना की जाती थी। इन प्रार्थनाओं को सुनकर वे, जो दया के सागर हैं और सभी लोकों के मित्र हैं, उन्हें अपनी कृपा प्रदान करते हैं। वह जगन्नाथ स्वामी महान समुद्र की पुत्री (लक्ष्मी, उनकी दिव्य पत्नी) के साथ हमारी दृष्टि का उद्देश्य हो।

अद्वैत दर्शन के प्रस्तावक आदि शंकराचार्य पुरी आए और श्री जगन्नाथ अष्टकम् के नाम से जानी जाने वाली अत्यधिक लोकप्रिय भक्ति संस्कृत कविता की रचना की। उन्होंने पुरी में एक मठ भी स्थापित किया जिसे गोवर्धन पीठ के नाम से जाना जाता है। यह आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मूल मठों में से एक है।

जगन्नाथ पुरी की महिमा और चमत्कार आज भी अनसुलझे हैं। कैसे पताका वायु के विपरीत उड़ती है, क्यों कभी भोग कम नहीं होता और न ज्यादा होता है चाहे एक लाख लोग आये या दो लाख। क्यों सात हांडी में

पकाए भोग में सबसे पहले ऊपर की हांडी का पकता है। अनेक रहस्य है।

आज मैं जगन्नाथ अष्टकम का अनुवाद लेकर आया हूँ। मूल स्तुति अष्टकं शिखरिणी छंद में लिखा गया है। मैंने अनुवाद भी उसी छंद में करने का प्रयास किया है। आपकी प्रतिक्रिया अति आवश्यक है।

श्री नानक देव पुरी आए और कहा जाता है कि उन्होंने भगवान जगन्नाथ के चरण कमलों में अपनी प्रार्थना की, भले ही नानक मुख्य रूप से निर्गुण ब्राह्मण के प्रस्तावक थे। वह कुछ समय के लिए पुरी में रहे और एक मठ की स्थापना की जिसे आज मंगू मठ के नाम से जाना जाता है। असम के एक संत थे, जिन्हें शंकरदेव के नाम से जाना जाता था जो निर्गुण पंथी भी थे। लेकिन जब उन्होंने पुरी का दौरा किया तो उन्होंने भगवान के प्रति अपनी भक्ति अर्पित की जो सगुण ब्राह्मण की अभिव्यक्ति हैं।

संत कबीर ने पुरी का दौरा किया और पाया कि अल्लाह और जगन्नाथ में कोई अंतर नहीं है। पुरी समुद्र तट पर कबीर घाट उनकी यात्रा और इस दिव्य शहर में ठहरने का प्रमाण है। पुरी में तुलसी चौरा नामक एक स्मारक है। संत तुलसी दास ने यहां ध्यान किया था और परिणामस्वरूप भगवान जगन्नाथ की मूर्ति में भगवान राम को देखने में सक्षम थे। जब गणेश भक्त गणपति भट्ट पुरी आए तो उन्होंने श्री जगन्नाथ में भगवान गणेश को देखा।

गैर-वैष्णव और गैर-हिंदू पृष्ठभूमि से ऐसे कई भक्त हुए हैं। जब वे पुरी आए तो उनकी पृष्ठभूमि के बावजूद वे भक्ति से अभिभूत हो गए। बड़ी संख्या में मठों और विभिन्न संप्रदायों के अन्य स्मारकों की उपस्थिति उनकी भक्ति की गवाही देती है। भगवान जगन्नाथ भी विशिष्ट दिनों में भगवान के विभिन्न रूपों जैसे गणेश, बुद्ध आदि के समान दिखने के लिए विभिन्न प्रकार की वेशभूषा और अवतार धारण करते हैं, यह दर्शाता है कि ''वह सभी में हैं'' और ''सभी उनमें हैं।''

चैतन्य महाप्रभु भगवान जगन्नाथ के बहुत बड़े भक्त थे। कुछ लोगों का मानना है कि वह कृष्ण के अवतार हैं। वह उपदेश देते हैं कि कृष्ण के नाम का जाप ही भक्त होने के लिए पर्याप्त है। यह एक सरल उपदेश है और कोई भी ऐसा कर सकता है। इस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति को ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए संस्कृत सीखने की आवश्यकता नहीं है। उनके नाम का जप ही काफी है और इसके प्रभाव में किसी मंत्र से कम नहीं है। उनकी जप पद्धति ने भक्ति परंपराओं को लोकप्रिय बनाया है। चैतन्य महाप्रभु के कृष्ण प्रेम के कारण कुछ लोग यह भी मानते हैं कि वे श्री राधा के पुरुष अवतार हैं।

शिखरिणी छंद

कदाचित् कालिन्दी तट विपिन सङ्गीत तरलो
मुदाभीरी नारी वदन कमला स्वाद मधुपः।
रमा शम्भु ब्रह्मामरपति गणेशार्चित पदो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ रमणीय भवतु मे॥1॥

कभी तो कालिंदी तट पर रखें वेणु बजती
कभी भौरों सा स्वाद ग्रहण करें आनन तभी
रमा शम्भु ब्रह्मा गणधि सुर पूजे सब कहे
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटित्ते
दुकुलं नेत्रान्ते सहचर-कटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्-वृन्दावन-वसति-लीला-परिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-प्रवासी भवतु मे ॥2॥

भुजा बायीं बंशी कटि करधनी पिच्छ शिखि के
दृगों के कोनों से सहचर लखें पीत पट से
सुनो कान्हा वृंदावन रहत लीला कि करते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

महाम्भोधेस्तीरे कनक रुचिरे नील शिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना।
सुभद्रा वचनः सकलसुर सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-गमन भवतु मे ॥3॥

लिए भा सोने की जलधि तट नीले शिखर पे
बड़े प्रासादों में वसत बलभद्रा सहित वे
सुभद्रा ने सेवा अवसर दिया आत्म सुख ते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

कृपा परवारः सजल जलद श्रेणिरुचिरो
रमा वाणी रामः स्फुरद् अमल पडकेरुहमुखः।
सुरेन्द्रै आराध्यः श्रुतिगण शिखा गीत चरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ प्रवेशी भवतु मे॥4॥

कृपा के पारावार रमणिक काले जलद से
रमा की वाणी से रसज मुख नीलोत्पल लगे
सुरों द्वारा पूजे उपनिषद भी गान कहते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावम् प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दया सिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धु सुतया
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे॥5॥

प्रभो जाएं आरूढ़ रथ पर तभी ब्रह्मण कहें
सदा गीतों से हर्षित भजन के माध्यम रहें
दया के पारावार जगत सुधा पान करते

परंब्रह्मापीड़ः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे।।6।।

सुमाथे का आभूषण कमल से नेत्र उनके
निवासी है नीलाद्रि पर चरण राजीव शिर पे
रसानन्दी राधा वदन परिरम्भा शीत सर से
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

न वै याचे राज्यं न च कनक माणिक्य विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल जन काम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथ पतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे।।7।।

न मांगूं सोना माणिक रजत या राज्य धन को
न चाहूं भार्या सुंदर सकल काम्या बस रखो
सदा कालों के काल शिव सत पूज रटते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

हर त्वं संसारं द्रुततरम् असारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिम् अपरां यादवपते
अहो दीनेऽनाथे निहित चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥8॥

हरो मेरी संसार जनित यहाँ पीर अब तो
हरो तो आ अम्बोध विशद यहां पाप भर जो
अहो ओ दीनानाथ चरण तुम्हारे हि सजते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

इति श्रीमद् शङ्कराचार्यप्रणीतं जगन्नाथाष्टकं संपूर्णम् ॥
जगन्नाथाष्टकं पुन्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
सर्वपाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥9॥

यह श्रीमद् शंकराचार्य द्वारा जगन्नाथ अष्टकम का समापन है। भगवान जगन्नाथ की महिमा करते हुए इन आठ श्लोकों का पाठ करने वाला स्व-प्रशिक्षित, पुण्य आत्मा सभी पापों से मुक्त हो जाता है और विधिवत रूप से भगवान विष्णु के धाम को जाता है।

श्री आदि शंकर रचित कृष्णाष्टकम

आदि शंकर द्वारा रचित कृष्णाष्टकम भगवान श्रीकृष्ण के विग्रह रूप का मनोहारी वर्णन है, जिसे उन्होंने अति प्रभावशाली पञ्चामर छंद में लिखा है, उसकी मादकता देखने लायक है। मैने उसी छंद में अनुवाद का प्रयास किया है ताकि वही मादकता बनी रहे।

पञ्चामर छंद में

भजे व्रजैक मण्डनम्, समस्त पाप खण्डनम्
स्वभक्त चित्त रञ्जनम्, सदैव नन्द नन्दनम्
सुपिन्छ गुच्छ मस्तकम्, सुनाद वेणु हस्तकम्
अनङ्ग रङ्ग सागरम्, नमामि कृष्ण नागरम्।।1।।

मनोज गर्व मोचनम् विशाल लोल लोचनम्
विधूत गोप शोचनम् नमामि पद्म लोचनम्
करारविन्द भूधरम् स्मितावलोक सुन्दरम्
महेन्द्र मान दारणम्, नमामि कृष्ण वारणम्।।2।।

कदम्ब सून कुण्डलम् सुचारु गण्ड मण्डलम्
व्रजान्गनैक वल्लभम् नमामि कृष्ण दुर्लभम्
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतम सुखैक दायकम् नमामि गोप नायकम्।।3।।

सदैव पाद पङ्कजम मदीय मानसे निजम्
दधानमुत्तमालकम्, नमामि नन्द बालकम्
समस्त दोष शोषणम्, समस्त लोक पोषणम्
समस्त गोप मानसम्, नमामि नन्द लालसम्।।4।।

भुवो भरावतारकम् भवाब्दि कर्ण धारकम्
यशोमती किशोरकम्, नमामि चित्त चोरकम्
दृगन्त कान्त भङ्गिनम्, सदा सदालसंगिनम्
दिने दिने नवम् नवम् नमामि नन्द संभवम्।।5।।

गुणाकरम् सुखाकरम् कृपाकरम् कृपापरम्
सुरद्विषन्निकन्दनम्, नमामि गोप नन्दनम्
नवीनगोप नागरम् नवीन केलि लम्पटम्
नमामि मेघ सुन्दरम् तथित प्रभालसथ्पतम्।।6।।

समस्त गोप नन्दनम्, हुदम्बुजैक मोदनम्
नमामि कुञ्जमध्यगम्, प्रसन्न भानु शोभनम्
निकामकामदायकम् दृगन्त चारु सायकम्
रसालवेनु गायकम्, नमामि कुञ्जनायकम्।।7।।

विदग्ध गोपिका मनो मनोज्ञा तल्पशायिनम्
नमामि कुञ्ज कानने प्रवृद्ध वह्नि पायिनम्
किशोरकान्ति रञ्जितं, दृगन्जनं सुशोभितम्
गजेन्द्र मोक्ष कारिणम्, नमामि श्रीविहारिणम्।।8।।

यथा तथा यथा तथा तदैव कृष्ण सत्कथा
मया सदैव गीयताम् तथा कृपा विधीयताम
प्रमानिकाश्टकद्वयम् जपत्यधीत्य यः पुमान
भवेत् स नन्द नन्दने भवे भवे सुभक्तिमान।।9।।

भावार्थ—पञ्चामर छंद में ही

भजो ब्रजेश श्याम को, समस्त पाप नाश हो
स्वभक्त चित्त नाद हो, सदैव कृष्ण जाप हो
सुपंख मोर के धरे, निनाद वेणु हाथ रे
अनंग रंग सागरे नमामि कृष्ण सांवरे।।1।।

अनंग दर्प नाश को विशाल लोल नेत्र को
न शोक ताप गोप का, नमो सरोज नेत्र को
उठा पहाड़ हस्त से, छटा मनोहरी हरे
सुरेश दर्प चूरते, नमामि कृष्ण सांवरे।।2।।

कदम्ब पुष्प कुंडले, कपोल गोल हासिते
ब्रजांगना प्रिये हरे, नमामि कृष्ण दुर्लभे
यशोमती दुलार दे, सदैव आप हर्ष दें
गवाल बाल चाहते नमामि गोप बावरे।।3।।

सरोज पाद आपके, सदैव हर्ष वंदना
मदपत्त केश घुंघरावली नमामि नंदना
समस्त दोष तारते समस्त लोक धारते
समस्त गोपिका प्रिये नमामि नंद तारदे।।4।।

उतार भूमि भार को, भवी समुद्र पाम है
यशोमती किशोर चित्त चोर को प्रणाम है
दृगन्त कांत भंगिमा सदैव गोपिका नमो
विभक्त भक्त नित्य नंद नंद नामिका नमो।।5।।

प्रदत्त हैं गुणी समस्त पूर्णता कृपा करें
समस्त व्याधि नाश आप देवता भला करें
नवीन गोप मित्र संग आप खेल खेलते
नमामि पीत वस्त्र मेघ रंग देह धारिते।।6।।

समस्त गोपिका प्रिये प्रसन्न चिज्ञ आप हैं
विराज कुंज मध्य हर्ष भानु भांति आप है
स्वभक्त चाह पूर्णकारि तीर सी निगाह है
रसाल वेणु गान गायकी नमामि आर्य है।।7।।

विदेह गोपिका मनस्थ सेज आप साजते
वियोग अग्नि भक्त की प्रशांत आप राखते
किशोर कांति आभ संग नेत्र अंजनी लगा
गजेंद्र मोक्ष दायि शक्ति श्री विहार वंदना।।8।।

जहाँ कहीं रहूँ सदैव आपकी कथा सुनूँ
कृपा करें प्रभो सुगीत आपके सदा भजूँ
द्विअष्ट पान कृष्ण जो करे कृपा बनी रहे
सदैव कृपा भक्ति वहाँ नंद लाल की रहे।।9।।

भज गोविन्दम

चौपाइयों में काव्यानुवाद

चर्पट पंजरिका (भज गोविन्दम) जगदगुरु आदिशंकराचार्य जी की लिखी हुयी एक लघु ग्रन्थ रचना है। यह प्रकरण ग्रन्थ के नाम से भी जानी जाती है, जिसे हम किसी वृहद ग्रन्थ का आगाज कह सकते हैं। हालाँकि यह भजन की तरह गाई जाती है, परन्तु इसमें वेदांत के सभी तत्व हैं। जैसे कि ''मैं'' इस जीवन में क्यूँ आया? मेरे पास अगाध संपत्ति है। भरपूर परिवार है पर शांति क्यूँ नही? सत्य क्या है? जीवन का उद्देश्य क्या है? अत: मनुष्य जागृत हो, अंत: मार्ग पर स्वत: चल पड़ता है।

भज गोविन्दम लिखने के पीछे क्या रहस्य है यह जानना जरूरी है। काशी प्रवास के समय आदि शंकर ने एक वृद्ध व्यक्ति को पाणिनि लिखित संस्कृत व्याकरण के नियम का अध्ययन करते देखा। शंकराचार्य के दिमाग में यह बात आई की देखो बेचारा जीवन भर ज्ञान पाने के चक्कर में रह गया, जबकि वह अपने मन-मस्तिक को केंद्रित करने एवं प्रार्थना में लगाता तो मन शांत रहता। शंकराचार्य ने यह भी पाया की संसार के अधिकांश लोग केवल अपने को बुद्धिमान बताने एवं इंद्रिय सुख में लगे रहते हैं न कि भगवद भजन में। यह सोच-सोच उन्होंने भज गोविन्दम की रचना कर डाली। 31 श्लोकों में अन्य की तरह इन्होंने भी जीवन के प्रति मनुष्य का गलत उपगम, गलत सोच, कुतर्क, लोगों की अज्ञानता एवं भ्रान्ति को समझाया है। अत: पहले इसे मोह मुग्धरा के नाम से पुकारा गया।

शंकराचार्य ने हमें दुत्कारा है कि हम क्यों सुलभ वस्तुओं में जैसे – धन जमा करना, स्त्री सुख इत्यादि में समय नष्ट करते हैं, जबकि हमें वास्तविक एवं काल्पनिक सुख के बीच अंतर का ज्ञान होना चाहिए। अंत में समापन करते हुए कहते हैं कि हमें बाहरी ज्ञान के बजाय निज के अंदर का ज्ञान होना चाहिए, बाहरी ज्ञान तो बेकार है। शंकर बतलाते हैं कि इन वृतियों में फंस कर मनुष्य कितना मूर्ख होता है। इन श्लोकों से वे बतलाते हैं कि जीवन का उद्देश्य गोविन्द को पाने में ही है।

भज गोविन्दम द्वादश मंजरिका स्तोत्र एवं चतुर्दस मंजरिका स्तोत्र में विभाजित है, जब पहला श्लोक लिखा तो बाकी के ग्यारह श्लोक अपने आप फुट पड़े। इसलिए पहले 12 श्लोक को द्वादश मंजरिका कहा गया। इनसे प्रेरित हो आदि शंकराचार्य के 14 शिष्यों ने एक-एक श्लोक की रचना की। इन 14 श्लोक को चतुर्दस मंजरिका कहा गया। शंकराचार्य जी ने बाद में समापन के लिए पांच श्लोक जोड़े, इस प्रकार कुल 31 श्लोक हुए। अंतिम दो श्लोक हर जगह उपलब्ध नही हैं। इन्हें जोड़ कुल 33 हैं।

भज गोविन्दम को संगीत बद्ध किया गया एवं बालकों द्वारा यह प्रार्थना स्वरूप गाया जाने लगा। यह द्वादश पंजरिका और चर्पट पंजरिका में विभाजित है। प्रथम 12 द्वादश पंजरिका जबकि बाकी के सभी चर्पट पंजरिका।

जो कोई भी इसे सुनता है, इसके प्रति अवश्य आकर्षित हो जाता है, जबकि इसका भाव बहुत गंभीर है एवं यह समुच्चय मोक्ष प्राप्ति का दर्शन है।

शंकराचार्य के शज़्द बहुत तीखे हैं। वह मधुरता इसमें नहीं है जो उनकी अन्य कृतियों में है, इस कठोरता के चलते यह सीधे दिल में उतरती है। इसका मुख्य कारण है यह एकाएक उठे उद्गार है जो एक वृद्ध व्यक्ति को देख कर उठे थे। इन शब्दों को शल्य चिकित्सक की छुरी से तुलना की जा

सकती है, जो की निरीहता से वेदना सहित शरीर के मृत अंग को काट देता है एवं अंततः स्वस्थ कर सुख देता है। वैसे ही शंकर के शब्द हमारे अज्ञान को काट कर अलग कर देते हैं। गोविन्द की असीम कृपा से ये अज्ञान एवं भौतिकवाद को दूर कर अनंत सुख शांति प्रदान करते हैं।

॥1 ॥

भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भजमूढमते।
सम्प्राप्ते सन्निहिते काले नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे॥

नियम व्याकरण नही चले रे। जब यम फंदा आय गले रे।
भज गोविंदा भज गोविंदा। जड़मति रे तू, भज गोविंदा।

॥2 ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम्॥

झांक सत्य में मनवा जोड़ो। मूढ़ संपत्ति तृष्णा छोड़ो।
किया विगत में वही मिलेगा। धैर्य धरो कुछ ना बिगड़ेगा।

॥3 ॥

नारीस्तनभर नाभीदेशं दृष्ट्वा मागामोहावेशम्।
एतन्मांसवसादि विकारं मनसि विचिन्तय वारं वारम्॥

देख नाभि स्तन क्यूँ मन डोला। मांस लोथड़ा जग यह बोला।
सोच न मन ये बारंबारा। वासना वृद्धि हो निस्तारा।

॥4 ॥

नलिनीदलगत जलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम्॥

जल बूँद गिरे जलज से जैसे। जीवन भी चल जाता वैसे।
ये जग तो है बस आहारा। यह रोग शोक दंभ विकारा।

॥5 ॥

यावद्वित्तोपार्जन सक्तस्तावन्निज परिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जर देहे वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे॥

जब बदन निरोगी हो प्यारा। दूजे का तू होय सहारा।
बहुत प्यार घुमड़ घुमड़ आये। तन बल जाय भाग सब जाएं।

॥6 ॥

यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये॥

जब तक घट में प्राण रहत हैं। बंधू भी कुशल पूछत हैं।
प्राण गए तन से आभागे। नार देख शव भय से भागे।

॥7 ॥

बालस्तावत्क्रीड़ासक्तः तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तासक्तः परमे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः॥

बचपन सदा खेल में खोया। यौवन नारी रूप भिगोया।
बुढ़ापा सोच सोच बिताया। ब्रह्म मोह तू क्यों ना लाया।

॥8 ॥

काते कान्ता कस्ते पुत्रः संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयातः तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः॥

है कौन पुत्र कौ है दारा। है जगत अनजान पीटारा।
आया तू कहांसे उचारो। भाई सच यह जरा विचारो।

॥9 ॥

सत्सङ्गत्वे निस्सङ्गत्वं निस्सङ्गत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः॥

सद्संगत विरक्ति लाती है। विरक्ति विभ्रांति भगाती है।
विरक्ति तुझ को स्थिर है करती। स्थिर होय ही मोक्ष है मिलती।

॥10 ॥

वयसिगते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणेवित्ते कः परिवारः ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः॥

यौवन गए काम क्या आछा। जल गए सरोवर क्या सांचा।
धन गए कहाँ बांधव जाते। सत्य जाए जगत कहाँ पाते।

॥11 ॥

मा कुरु धन जन यौवन गर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा बुध्वा ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा॥

गर्व न कर धन मित यौवन का। आये क्षण में समय शमन का।
इस भ्रम से आजाद हो तू। पा अनंत सच निश्चित सो तू।

॥12॥

दिनयामिन्यौ सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीड़ति गच्छत्यायुः तदपि न मुक्त्याशावायुः॥

भानु प्रभा या हो अँधियारा। भोर सांझ बसंत या जाडा।
जाते समय प्राण ले जाता। झंझा कामना का न जाता।

॥12अ॥

द्वादशमञ्जरिकाभिरशेषः कथितो वैयाकरणस्यैषः।
उपदेशो भूद्विद्यानिपुणैः श्रीमच्छन्करभगवच्छरणैः॥

दोहा—

बारह श्लोकों का धडा, लिया व्याकरण कार।
भगवद पद कहलाय है, शंकर का उपहार।

॥13॥

काते कान्ता धन गतचिन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता।
त्रिजगति सज्जनसं गतिरैका भवति भवार्णवतरणे नौका॥
(शिष्य – पद्मपद द्वारा रचित)

मूरख धन की इच्छा ज्यों लाया। क्या कोई न तुझे समझाया।
त्रिलोक से भव पार लगाये। नांव सद्संग की चढ़ जाए।

॥14 ॥

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः काषायाज्बरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि चन पश्यति मूढः उदरनिमिज्ञं बहुकृतवेषः॥
(शिष्य – तोटकाचार्य द्वारा रचित)

जटा धरे तो सर मुंडाए। खिंच केश पीड़ा अपनाए।
गेरुआ या अन्य रँग धारे। देखो पेट का खेल प्यारे।

॥15 ॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुक्त्याशापिण्डम्।
(शिष्य – हस्तमलाक द्वारा रचित)

गल गए अंग मुंड मुडाया। दांत झड़े लाठी पर आया।
मोह न छूटे बढ़ता जाए। व्यर्थ इच्छा न कम हो पाए।

॥16 ॥

अग्रे वह्निः पृष्ठेभानुः रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षस्तरुतलवासः तदपि न मुक्त्याशापाशः॥
(शिष्य – सुबोध द्वारा रचित)

है आगे अनल भानु पीछे। निशि ठोड़ी घुटन बीच भींचे।
खाय भिक्षु सा सोय वृक्ष नीचे। फिर भी कामना सदा सींचे।

॥17 ॥

कुरुते गङ्गासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन मुक्तिं न भजति जन्मशतेन॥
(शिष्य – वार्तिककार द्वारा रचित)

चाहे गंगासागर जाओ। उपवास करो दान कराओ।
बिनु ज्ञान मिले न मुक्ति भाया। क्यूँ न जनम सौ ख़तम कराया।

॥18 ॥

सुर मन्दिर तरु मूल निवासः शय्या भूतल मजिनं वासः।
सर्व परिग्रह भोग त्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः॥
(शिष्य – नित्यानंद द्वारा रचित)

तरु छाँव रहो या मंदिर में। भूतल शैया वस्त्र मजिन के।
मोहा छोड़ा सब सुख त्यागा। देवे ना सुख यह वैरागा।

॥19 ॥

योगरतो वाभोगरतोवा सङ्गरतो वा सङ्गविहीनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं नन्दति नन्दति नन्दत्येव॥
(शिष्य – आनंद्गिरी द्वारा रचित)

रहो योग में या बन भोगी। अनुरक्ति न तो विरक्ति होगी।
लगा ब्रह्म में चित्त हो निवृति। केवल केवल यह है सच वृति।

॥20॥

भगवद् गीता किञ्चिदधीता गङ्गा जललव कणिकापीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा क्रियते तस्य यमेन न चर्चा॥

(शिष्य – दृढभक्त द्वारा रचित)

पढ़ सब कुछ पर कुछ पढ़ गीता। पी दो बूंदें गंगा सरिता।
पूज सभी पर कभी मुरारी। यम सँग चिंता जाय तुम्हारी।

॥21॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे कृपयाऽपारे पाहि मुरारे॥

(शिष्य – नित्यनाथ द्वारा रचित)

फिर से जनमन फिर से मरणन। बार बार गर्भ माँ का धरणन।
कितना कठिन पार है करना। मुरारी तुही किरपा रखना।

॥22॥

रथ्या चर्पट विरचित कन्थः पुण्यापुण्य विवर्जित पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तो रमते बालोन्मत्तवदेव॥

(शिष्य – नित्यनाथ द्वारा रचित)

चिथड़े भी साधु को बहुत है। फिरत सड़क पर व्यसन मुक्त है।
रहे शरण प्रभु भोगे सुख है। विशुद्ध पावन बालक मुख है।

॥23 ॥

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारम् विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारम्।
(शिष्य – सुरेन्द्र द्वारा रचित)

मैं कौन हूँ कहाँ से आया। कौन बाप माँ बन है जाया।
वितर्क कर तू देख विचारा। सार हीन सब स्वप्न सँसारा।

॥24 ॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्॥
(शिष्य – मेधातिथिरा द्वारा रचित)

मुझमे तुझमे विष्णु विराजे। क्रोध लोभ अर्थ हीन साजे।
विष्णु उसी में जाय समाये। समभाव दृष्टि जिसमे आये।

॥25 ॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्॥
(शिष्य – मेधातिथिर द्वारा रचित)

मित्रता शत्रुता में ना पड़। मित्र शत्रु बंधू में ना लड़।
सब में देख स्वरूप निज प्यारे। छाड़ि भेद भाव ज्ञान पा ले।

॥26 ॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम्।
आत्मज्ञान विहीना मूढाः ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः॥
(शिष्य – भारतीवंश द्वारा रचित)

काम क्रोध लोभ मोह छोड़ो। शुद्ध तर्क से निज को जोड़ो।
अंधे खुद से मुरख कहाते। अनंत कष्ट नरक जा पाते।

॥27 ॥

गेयं गीता नाम सहस्त्रं ध्येयं श्रीपति रूपमजस्त्रम्।
नेयं सज्जन सङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम्॥
(शिष्य – सुमतिर द्वारा रचित)

नित पाठन कर गीता लय से। विष्णु नाम कर जाप हृदय से।
सज्जन साधू का हो संगा। दान दीन को कर मन चंगा।

॥28 ॥

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम्॥

सुख की खातिर भोगी जीवन। बनाया तुने रोगी जीवन।
समाप्त करेगी मृत्यु सब कुछ। फिर भी छोड़े न तू पाप रुख।

॥29॥

अर्थमनर्थं भावय नित्यं नास्तिततः सुखलेशः सत्यम्।
पुत्रादपि धन भाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः॥

धन करे न उपकार कभी भी। सत्य यही सुख नहीं कभी भी।
लगे पुत्र से भी भय जानो। धन का यही खेल है मानो।

॥30॥

प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्य विवेकविचारम्।
जाप्यसमेत समाधिविधानं कुर्ववधानं महदवधानम्॥

होय श्वास भोजन का संयम। नित्य अनित्य का विवेक नियम।
भज प्रभु नाम शांत मन कर लो। नित अति सहज रीत यह कर लो॥

॥31॥

गुरुचरणाम्बुज निर्भर भक्तः संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानस नियमादेवं द्रक्ष्यसि निज हृदयस्थं देवम्॥

व्याकरण आचार्य क्यूँ खोया। सुक्ष्म सोच नियमों में सोया।
प्रकाश शंकर के मत से लो। अरे मुरख ब्राह्मण मति ले लो॥

॥32॥

मूढः कश्चन वैयाकरणो डुकृञ्करणाध्ययन धुरिणः।
श्रीमच्छम्कर भगवच्छिष्यै बोधित आसिच्छोधितकरणः॥

गुरु चरण कमल पुजने वाले। भवसागर पार तू करवाले।
इंद्रिय मन हो सदा संयमित। निज ह्रदय देव हो आलोकित।

॥33॥

भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भजमूढमते।
नामस्मरणादन्यमुपायं नहि पश्यामो भवतरणे॥

भज गोविंदा भज गोविंदा। जड़मति रे तू, भज गोविंदा।
भवसागर पार करना चाहो। अतिरिक्त न पथ दूजा पाओ।

महिषासुर मर्दिनी

कनकमंजरी में

महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र माँ दुर्गा का सबसे ज्यादा प्रचलित स्तोत्र है, जिसे आदि शंकराचार्य ने लिखा है। इस श्लोक से ही प्रकट होता है कि शंकर की माँ दुर्गा पर कितनी आस्था थी। ये भक्ति से परिपूर्ण श्लोक माँ महिषासुर मर्दिनी को संबोधित हैं। माँ दुर्गा ने जब महिष राक्षस का वध किया तो पूरे ब्रह्माण्ड में खुशी की लहर दौड़ उठी थी, तब से माँ को महिसासुर मर्दिनी नाम से बुलाया जाने लगा। माँ दस भुजा वाली सिंह सवारी करने वाली एवं अस्त्र-शस्त्र से सज्जित विभिन्न मुद्राओं में दर्शित हैं।

यह स्तोत्र चंडी पाठ का हिस्सा है। दुर्गा शक्ति का पर्याय मानी जाती है। महिषासुर राक्षसों का राजा था एवं उसके अत्याचार से सारे देवता त्रस्त थे। तब सब देवों ने मिल कर ब्रह्मा-विष्णु-महेश से विनती की, सभी देवों से कुछ न कुछ अंश लेकर एक प्रकाशपुंज उत्पन्न हुआ। वह प्रकाशपुंज स्त्री का रूप ले लिया। वह रूप माँ दुर्गा कहलाई। तब सब देवों ने उसे आयुध से सज्जित किया, ताकि वे महिसासुर का वध कर सके। इस तरह माँ ने असुर सम्राट का वध कर देवों के ताप को दूर किया। इस पूजन से हर तरह के संताप मिटते हैं।

जो भक्त माँ के इस पाठ का नित्य श्रद्धा एवं भक्ति से गायन करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से हर क्षेत्र में विजय मिलती है। उन्हें सांसारिक दु:ख से निजात मिलती है। माँ दुर्गा ने जैसे महिष का वध किया, वैसे ही वह भक्त के सब कष्ट का वध कर देती है।

कनकमंजरी में

श्लोक-1

माँ दुर्गा-शैलपुत्री एवं विश्व को आनंद प्रदायनी

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥1॥

जय गिरि नंदिनि विश्व विनोदिनि पूजत हर्षित नंदि हुए
गिरि वर विंध्य निवास करे सुख दायक विष्णु प्रसन्न हुए
नमन करे सुर नायक शंकर पत्नि विशाल कुटुंब भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥1॥

श्लोक-2

माँ दुर्गा-त्रिलोक पोषण करने वाली एवं
दानव दैत्यों का मर्दन करने वाली

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।2।।

अविरल दे वर देवन दुर्धर दुर्मुख मार दिए तुमने
त्रिभुवन पोषण शंकर तोषण दानव क्रोध किये तुमने
दलन घमण्ड किया चिति ने कर गर्जन सिंधु सुता बिफरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे।।2।।

श्लोक-3

माँ दुर्गा-मधु कैटभ का वध करने वाली

अयि जगदम्भ मदम्ब कदम्ब वनप्रियवासिनि हासरते
शिखरि शिरोमणि तुङ्गहिमलय शृङ्गनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगर्भिनि कैटभभर्भिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥3॥

अयि जग अम्ब कदम्बन के वन वासति हास्य रचा रखती
शिखर हिमालय में घर आप बना निज धाम सदा रहती
मधु मद कैटभ का मधु का मद मात यहाँ तब भंग करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥3॥

श्लोक-4

माँ दुर्गा-चंड मुंड दानवों को तारने वाली

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्द गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपातितमुण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।4 ।।

जननि उमा अरि सूंड वितुण्ड करे गज खण्डित रुंड करे
रिपु गज सिंह विदारण चण्ड निपातित मारत भुंड करे
निजभुज अस्त्र प्रयोग करे सर चण्ड व मुण्ड निपात करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ।।4 ।।

श्लोक-5

माँ दुर्गा-महादेव को बना दूत भेजा
शुम्भ-निशुम्ब के पास

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदुत कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥5॥

वध रण में कर शत्रु विनाशक दुर्धर निर्जर शक्ति भरे
चतुर विचार सुनी तब शंभू बने जग सेवक भक्ति भरे
कुमति भरी जब दानव बात सुनी उसकी कथनी न करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥5॥

श्लोक-6

माँ दुर्गा-क्षमा देती जब जब दुश्मन
की पत्नियां शरण आती

अयि शरणागत वैरिवधुवर वीरवराभय दायकरे
त्रिभुवनमस्तक शुलविरोधि शिरोऽधिकृतामल शुलकरे।
दुमिदुमितामर धुन्दुभिनादमहोमुखरीकृत दिङ्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।6।।

सुन शरणागत शत्रु वधू जब आग्रह कीन्हि दिया वर था
त्रिभुवन त्रस्त हुआ जब दानव से तब हस्त लिया शर था
दुमिदुमि ले सुर दुंदुभि नाद चतुर्दिश व्याप्त प्रवास करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे।।6।।

श्लोक-7

धूम्रलोचन-रक्तबीज-शुम्भ-निशुम्ब
का वध करने वाली माँ

अयि निजहुङ्कृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते।
शिवशिवशुम्भ निशुम्बमहाहव तर्पितभूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥7॥

निरत हुँकार भरे तब धूम्र विलोचन भस्म करे जननी
समर हुआ तब शोणितबीज लहू पिव लाज रखी अपनी
क्षत हत शुम्भ निशुम्ब किया शिव को तब आप प्रसन्न करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥7॥

श्लोक-8

दुश्मन की चतुरंग सेना का संहार करने वाली माँ

धनुरनुषङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके
कनकपिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भटशृङ्ग हताबटुके ।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।8 ।।

चमकत कंगन औ धनु युद्ध धरा मणि बन्धन में जिनके
कनक शिलीमुख लाल हुआ जब शत्रु विदीर्ण करे तिनके
कर चतुरंग सँहार किया स्वरनाद विरोदन शत्रु करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ।।8 ।।

श्लोक-9

माँ दुर्गा-जिसका युद्ध भी एक नृत्य सदृस है

सुरललना ततथेयि तथेयि कृताभिनयोदर नृत्यरते
कृत कुकुथः कुकुथो गडदादिकताल कुतूहल गानरते।
धुधुकुट धुक्कुट धिंधिमित ध्वनि धीर मृदंग निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।9।।

सुर ललना तत थेयि तथेयि निनाद विनोदिनि नृत्य करे
निरत कुतूहल से मृदु गीत तरंग उमंग प्रभाव भरे
धि धिम मृदंग बजा ध्वनि धीर सुना जन भाव प्रमोद करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे।।9।।

श्लोक-10

मात-शिव अर्धांगिनी

जय जय जप्य जयेजयशब्द परस्तुति तत्परविश्वनुते
झणझणझिञ्झिमि झिङ्कृत नूपुरशिञ्जितमोहित भूतपते।
नटित नटार्ध नटी नट नायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 10॥

जय जय हो स्तुति मोहक विश्व समस्त नमस्कृत आप करा
झनझन शिंजनि नूपुर शब्द बजा कर भूपति मोह भरा
नट नटराज करावत नृत्य बतावत मोदित हर्ष भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे।10।

श्लोक-11

माँ दुर्गा-बुद्धि एवं सुन्दरता का अद्भुत मिश्रण

अयि सुमनःसुमनःसुमनः सुमनः सुमनोहरकान्तियुते
श्रितरजनी रजनीरजनी रजनीरजनी करवक्त्रवृते।
सुनयनविभ्रमर भ्रमरभ्रमर भ्रमरभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 11॥

मृदु मन सुंदर कांति प्रसून प्रशांति प्रदात्रि प्रभास भरे
नत रजनी रजनी पति चन्द्र प्रभा निज आनन ज़लांत करे
भ्रमर स्वरूप विलोचन लोचन सांवल रंग प्रमाद भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥11॥

श्लोक–12

दुर्दांत सैन्य दल के सामने कुमुदिनी सी
कोमल बालाओं की सेना माँ दुर्गा की

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
शितकृतफुल्ल समुल्लसितारुण तल्लजपल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥12॥

वन वन वल्लरि मल्लि सु कोमल सी भट के रण संग रहे
रचित सुवल्लरि पुष्प चमेलि सुशोभित भील सु नार कहे
सित नित व्यूष प्रभा रत हर्षित सस्मित देवि प्रणाम करें
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥12॥

श्लोक-13

सौन्दर्य-कला-संस्कृति का समावेश माँ दुर्गा के रूप में

अविरलगण्ड गलन्मदमेदुर मत्तमतङ्गजराजपते
त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहन मन्मथराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥13॥

अविरल स्त्रावित कर्ण यथा मद देवि गजेश्वरि प्रीतिलता
त्रिभुवन भूषण शक्ति स्वरूप कला सम सुंदर राज सुता
स्मित मुख नार लिए अभिलाष रहे सम मन्मथ की दुहरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥13॥

श्लोक-14

पवित्र कमल के पत्तों सी एवं अमल
मस्तक धारी माँ दुर्गा

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।
अलिकुलसङ्कुल कुवलयमण्डल मौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥14॥

कमल दलों सम कोमल कांति कला सम मस्तक धार उमा
धर सब केलि कला मद हंस लगे जब चाल चले यह माँ
कुमुदनि ज्यूँ भँवरों घिरि और बकूल सुशोभित केश भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥14॥

श्लोक-15

माँ दुर्गा जिनकी मधुर वाणी कोयल और
मुरली से भी ज्यादा मधुर है

करमुरलीरव वीजितकूजित लज्जितकोकिल मञ्जुमते
मिलितपुलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते।
निजगणभूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥15॥

मृदु मुरली जिनके कर कोयल लज्जित हो ध्वनि से जिनकी
सुमन खिले गिरि ऊपर संग पुलिंद मनोहर गीत गती
निज गुण से भर वो शबरी जन संग मिले अरु नृत्य करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥15॥

श्लोक-16

माँ दुर्गा जिनके देदीप्यमान मुखाकृति एवं
नख से दानव असुर भयभीत हैं

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयुखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुलसन्नख चन्द्ररुचे
जितकनकाचल मौलिमदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥16॥

कटितट पीत दुकूल लगा चमके तब चन्द्र प्रभा कम ज्यू निशिचर
देव किरीट प्रभा दमका नख पाद रही तम ज्यूँ
गज जय हेम गिरी मद से भर हो सम वक्ष स्थली निखरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥16॥

श्लोक-17

माँ दुर्गा-सुरथ एवं समाधि की पूजा से होती प्रसन्न

विजितसहस्त्रकरैक सहस्त्रकरैक सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥17॥

विजय मिली कर युद्ध सहस्त्र सहस्त्र मरे तब पूजित हो
जय सुर तारक देवि करा सह तारक युद्ध तरंगित हो
सुरथ समाधि रही व समान दया जब भक्ति अनूप करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥17॥

श्लोक-18

माँ दुर्गा-माँ देवी महालक्ष्मी का वास

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेद परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥18॥

चरण सरोज दयामय पूजत है करुणा कर आप सुने
सुन कमला जन वो कमला निलया रह क्यों न धनीक् बने
प्रिय शिव की सुन ले अनुशीलन पाद किया नर जो सँवरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे।18।

श्लोक-19

माँ दुर्गा-माँ देवी सरस्वती का वास

कनकलसत्कलसिन्धुजलैरनुषिञ्चति तेगुणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुम्भतटीपरिरम्भसुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥19॥

कनक समान नदी जल से करता छिड़कावन मंदिर में
शचिपति वक्ष लगे शचि के सम हर्ष मिले उसको दिल मे
पद शरणागत मंगल वास करे तुम में नत शीश धरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥19॥

श्लोक-20

माँ दुर्गा, इनका पूर्ण चन्द्र सा पवित्र मुख जीवन अमल करे

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दु मुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥20॥

शशि सम निर्मल है मुख जो कर शुद्ध समस्त अशुद्धि यहाँ
विमुख हुआ मन क्यों सुमुखी लख इंद्र पुरी समझा अब आ
सुन मत मात कृपा बिन प्राप्त नहीं शिव नाम दया धन भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥20॥

श्लोक-21

माँ दुर्गा-दुश्मनों पर ज्यूँ तीर बरसाती
भक्तों पर दया वैसे ही बरसाती

अयि मयि दीन दयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररीकुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥21॥

जय जय माँ तुम दीन दयालु दया कर तारण हार उमा
जग जननी बरसा तु दया बरसा शर मर्दन ज्यूँ अरि का
उचित लगे उस ही विधि आय समाप्त सभी मम ताप करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे॥21॥

देवी अपराध क्षमा स्तोत्र

आदि शंकर (अनुवाद–हरिगीतिका छंद में)

देवी दुर्गा के लिए लिखे स्तोत्र या प्रस्तुति या प्रार्थनाओं में यह सबसे महत्वपूर्ण स्तोत्र है, जिसे आदि शंकराचार्य ने लिखा है, ऐसा बताया गया है, पर इतिहास बताता है कि आदि शंकर का देहावसान कम आयु में हो गया था, परन्तु एक श्लोक में पिचासी वर्ष आयु का विवरण मिलता है, अत: संदेह होता है कि यह आदि शंकराचार्य द्वारा लिखा गया है कि नहीं ? परन्तु जो भी हो इस स्तोत्र के नित्य पाठ से मन की शुद्धि अवश्य होती है एवं एक सकारात्मक उर्जा आती है, क्यूँकि इसके स्वरों के प्रवाह में धीरे–धीरे बढ़ने वाली लयात्मकता है, आदि शंकर माँ दुर्गा के अनन्य भक्त थे, अत: उनकी रचनाओं में माँ के प्रति भावोद्गार मिलते ही हैं। इस स्तोत्र में भी माँ से एक नन्हें शिशु की भांति वे अपने पापों को हरने की प्रार्थना करते हैं एक अबोध, अनाथ, शिशु बनकर। जो यह कहते हैं कि उन्हें रीति–रिवाजों से पूजन तो नहीं आता पर माँ उनके ह्रदय में निवास करती है, अत: जो भी भूल हुई है, उसे माँ बालक समझ क्षमा कर दे।

12 श्लोकों के इस स्तोत्र को दुर्गा सप्तशती का प्रमुख अंग मान लिया गया है। गेयता की दृष्टि से श्रेष्ठ यह स्तोत्र बहुत ही मोहक है।

— सुरेश चौधरी

न मत्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥1॥

हे माँ न जानूँ मन्त्र कोई, यंत्र भी ना जानता
ना आय स्तुति, ध्यान न रिझाऊं, कौन ढंग कहूँ कथा
रोना न रो पाऊं, तुझे तो मैं न मुद्रा साधता
जानूँ तिहारे पुजन को बस, कष्ट हर ले माँ सदा

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥2॥

विधि से अभिज्ञ अभाव है धन का रहा ऐसा यहाँ
चूका सदा तेरे चरण पद कमल पुजने में सदा
ओ माँ क्षमा करना भुलें मुझ से हुई होंगी भले
माता न होती हैं कुमाता, पुत्र हो सकते भले

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥3॥

संसार में तेरे अनेकों पुत्र हैं सीधे सुना
उसमे मुझे ही जान विचलित, ईकलोता अनमना
होगा उचित क्या माँ मुझे कारण बिना यूँ त्यागले
माता न होती हैं कुमाता, पुत्र हो सकते भले

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥4॥

माते कभी ना की पुजा पद कमल की तू कर दया
न कभी धनों की भेंट डाली पाद पंकज में कदा
फिर भी तुम्हें ही स्नेह देता पा रहा माँ देखले
माता न होती हैं कुमाता, पुत्र हो सकते भले

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यानि शरणम्॥5॥

विविध विधि से कुलदेव को मैं ने न पूजा ज्या करूं
बीती उमर मेरी पिचासी, आपको कैसे भजू।
अब भी दया आये नही माँ अंतस न धीरज धरू
मैं बिन सहारा गणपति मतारी शरण तेरी रहूँ

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥6॥

चंडाल मैं जानू न वार्ता, हो गयी मधुर रसना
निर्धन हुआ निर्भय कृपा से आपकी ज्यू धन मिला
देवी अपर्णा कर्ण में हो अर्चना तू दे फला
माँ कौन जाने आपकी पूजा करे कितना भला

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7 ॥

भष्मी लगाये, विष पचाए, सदा दिक्पट धारता
जटि केश कंठे शेष है पशु पति कहा वो चाहता।
खप्पर धरे है हाथ पूजे भूत को जगदीश है
इतना बड़ा है नाम ज्यों की आपका पति ईश् है

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥8 ॥

ना मोक्ष की है कामना सुख भौति भी ना चाहता
ना ही मुझे शशिमुख सु बाला चाहिए ना मांगता
विज्ञान इच्छा भी नही बस नाम तेरा जापता
हे माँ मृडानी माँ शिवानी, बीत जा यूँ जापता

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥9॥

आराधना ना आपकी की, विधि विधान सजा कभी
जो भी विचार उतार माथे राखता बोलूं तभी।
तेरा अनाथ यह पड़ चूका, कुछ कृपा श्यामा करो
प्यारी जगन्माता समा लो आपमें छाया करो

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥10॥

दुर्भाग्य के माँ चक्र में फंसा तुझे सिमरण करूँ
धीरज दयाकी जलधि दुर्गामाँ, आपको सिमरण करूँ
मान न मुझे झूँठा कभी भी आपको सिमरण करूँ
भूखा व् प्यासा माँ करूँ फरियाद कर सिमरण करूँ

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराध परम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥11॥

आश्चर्य क्यूँ अम्बे तुझे क्या आपने ऐसा सुना
ममता दया हो आपकी भरपूर माँ तूझे गुना
की भूल बारम्बार यह सुत जो तुम्हारा हैं यहाँ
ममता मयी वो कष्ट दे ना, माँ भुलाती है कहाँ

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥12॥

दोहा—

माँ मैं पापी हूँ बड़ा तू है तारण हार।
देवी विचार सोच के, उचित करो उपचार॥

निर्वाण षटकम

निर्वाण षटकम आदि शंकराचार्य द्वारा रचित दुर्लभ स्त्रोत्र है, इसमें उन्होंने भगवान् शिव में अपने को समाहित कर अद्वेतवाद के महत्व को बतलाया है, स्त्रोत्र का शज़्द संयोजन एवं भाव प्रवाह अद्वितीय है। एक कथा है कि आचार्य का एक शिष्य आचार्य की तरह शिवोअहम का उच्चारण करने लगा बिना इसका लाभ जाने, आचार्य एक लोहार के पास गए और एक गिलास पिघला हुआ लोहा लिया और पी गए फिर शिष्य से कहा तुम भी ऐसा करो, वह ऐसा कैसे कर सकता था, मना कर दिया तब आचार्य ने बतलाया कि उनके लिए पिघला हुआ लोहा या बर्फीला पानी एक समान है, क्यूँकि उन्होंने शिव को पहचान लिया है और शिव के सिवा कुछ नही है, अत: जब तक शिष्य उस अवस्था में न पहुँच जाय तब तक शिवोअहम (मैं शिव हूँ) बोलने का कोई अर्थ नहीं।

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे न च व्योम भूमिर् न तेजो न वायु: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

स्तोत्र का भावानुवाद कुकुम्भ छंद में करने का प्रयास है —

॥ 1 ॥

मनो बुद्ध्यहंकारचिज़ानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे
न च व्योम भूमिर् न तेजो न वायुः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

बुद्धि न जानो न चित्त जानो, न अहंकार न मन हूं मैं
न कान में न देख जिव्हा में, न नासिका न नयन हूं मैं
मानो न व्योम में न अनल में, न वसुंधरा पवन हूं मैं
अनंत अमरहूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

॥ 2 ॥

न च प्राण संज्ञो न वै पक्वायुः न वा सप्तधातुर् न वा पञ्चकोशः
न वाङ्पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

मुझे न कह प्राण चेतना तू, न दैहिक चल पवन हूं मैं
न सप्त धातु देह रचना को, न पञ्चकोशी तन हूं मैं
जान न हाथ न पैर न वाणी, न इन्द्रिय विसर्जन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

॥ 3 ॥

न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः
न धर्मो न चार्थो न कामो ना मोक्षः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

न बैर न प्रेम मोह किसी से, ना ही लोभी जन हूं मैं
न ही मत्सर मुझमे मिलेगा, न अभिमान सिंचन हूं मैं
मैं हूं परे मोह लिप्सा से, न धर्म जान न धन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

॥ 4 ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखम् न मन्त्रों न तीर्थं न वेदाः न यज्ञाः
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

दुःख सुख मुझमें नपावोगे, न पापी न पावन हूं मैं
न मंत्र न तीर्थ न यज्ञ मानो, न ज्ञान का सर्जन हूं मैं
मुझे न भोगने योग्य जानो, न भोक्ता न भोजन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

॥ 5 ॥

न मृत्युर् न शंका न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैव माता न जन्म
न बन्धुर् न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

ना मुझे मृत्यु का लागे, न ही जाति बंधन हूं मैं
न मात न पिता कोई मेरा, न ही कभी जन्मन हूं मैं
न मेरा कोई शिष्य गुरु है, न मित्र बंधू जन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

॥ 6 ॥

अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणा
न चासंगतं नैव मुक्तिर् न मेयः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

मुझे सदा निर्विकल्प मानो, निराकार चिंतन हूं मैं
इन्द्रियों सब से पृथक जानो, न ही विचार मनन हूं मैं
न कल्पनीय हूं न मुक्ति हूं मैं, ना कोई आसंजन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

❍❍❍

श्रीमद शंकराचार्य कृत वेदसारशिवस्तव स्तोत्र का भावानुवाद

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसा वरेण्यम।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम॥1॥

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूष।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्॥2॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूप।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्॥3॥

शिवाकान्त शंभो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिञ्जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥4॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकारवेद्य।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्॥5॥

न भूमिर्नं चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न गृष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीड॥6॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम॥7॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानग ॥8॥

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शंभो महेश त्रिनेत्।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्य: ॥9॥

शंभो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेक-स्त्वंहंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥10॥

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मके हर चराचरविश्वरूपिन ॥11॥

भावानुवाद—

विरूपलोचन विभूतिभूषण विश्वरूप विभु विश्वनाथ विश्वेशर
चन्द्र सूर्य अग्नि अक्ष देवदुख दलन पंचमुख महेश्वर देवेश्वर
पशुपतिनाथ पापनाश परमेश्वर परम श्रेष्ठ पट तुण्ड चर्म धरे
जटा मध्य गङ्ग धरे कामारि महादेव शिव शम्भो हर हर हरे

हे कैलाशनाथ वृषभनाथ गणनाथ भूतनाथ देह भष्म भृत
अंनतरूप सृष्टि आदिकारक प्रकाशस्वरूप है विश्व चमत्कृत
पार्वती वल्लभ चन्द्रशेखर जटाजूटधारि त्रिशूल दक्षिण करे
जटा मध्य गङ्ग धरे कामारि महादेव शिव शम्भो हर हर हरे

हे परमात्मा जगकारक निराकार कामनारहित प्रणव के बोध
विश्व की उत्पत्ति पालन कर्ता प्रलयंकर बीज रूप ज्ञात शोध
न पंचभूत में न तन्द्रा निंद्रा शीत ग्रीष्म में न देश वेश धरे
जटा मध्य गङ्ग धरे कामारि महादेव शिव शम्भो हर हर हरे

शाश्वत अजन्मा सदैव कारक देव नित्य कल्याण स्वरूप शंकर
हे विश्वमूर्ति हे विभो तप योग से प्राप्तव्य प्रभो नमो अभ्यंकर
द्युतिस प्रकाश स्त्रोत अवस्थात्रय विलक्षण अनादिअज्ञान से परे
जटा मध्य गङ्ग धरे कामारि महादेव शिव शम्भो हर हर हरे

वेदवैद्य भगवान चिदानन्द नमस्तेस्तु त्रिशूल पाणि नमस्तेस्तु
करुणामयी गौरीपते पशुपते त्रिशूलिन काशीश्वर नमस्तेस्तु
कंदर्पदलन कष्ट हरण लिंगरूप जग पालन शिव ओम अक्षरे
जटा मध्य गङ्ग धरे कामारि महादेव शिव शम्भो हर हर हरे

— सुरेश चौधरी 'इंदु'

आदि शंकराचार्य विरचित भ्रामरी षटपदी पर आधारित

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शम विषयमृगतृष्णा।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः।।1।।

दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे।।2।।

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्व।
सामुद्रो हि तरंगः क्वचन समुद्रो तारंगः।।3।।

उद्धृतनग नगभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः।।4।।

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतावता सदा वसुधाम्।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम्।।5।।

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे।।6।।

नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु।।7।।

भावानुवाद—

नारायण मेरे मन के अविनय का दमन कीजिये
दया भाव बड़े विषय मृगतृष्णा का शमन कीजिये
संसार नीरनिधि से पार करो तरणि मेरी प्रभो
प्राणि मात्र कर्म प्राणी ही बने धरिणि मेरी प्रभो

परिमल सच्चिदानंद मकरन्द सुरसरि विष्णु वन्दन
श्रीपति चरणारविन्द भवभय नाशक शोक नाशन
तरंग जलधि से जलधि नहीं तरंग से जानते हम
आपसे ही मैं हूँ मुझसे आप नहीं मानते हम

धरा गोवर्धन नग नगभिद् अनुज दनुज कुल हन्ता
शशि भानु से दो, दो नैन प्रभा, प्रभावी भवकन्ता
दर्शन सुदर्शन धारी धार तितिक्षा उपेक्षा भव से
कर रक्षा नाथ भव रक्षक तटबंध भीषण रव से

प्रभु मत्स्यादि अवतार से अवतरित धरित्री रक्षक
त्रिविध ताप तापित प्रयुक्त हैं रक्षा को संरक्षक
दामोदर गुण मन्दिर सुन्दर वदन मनहर गोविन्द
भवनीरनिधि मंथन मन्दराचल सस्मित मुखारविंद

भय घन मुझ पर छाया दूर कीजिये दूर कीजिये
करुणामय नारायण चरण पड़ा आ शरण लीजिये
'इंदु' संकट विकट कट जाय कृपा ऐसी कीजिये
प्राणि मात्र कर्म बने ये तरणि धरणि मुझे दीजिये

— सुरेश चौधरी 'इंदु'

परिचय

सुरेश चौधरी `इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी
माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी
जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)
जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952
शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; जीवन वृतांत : शिक्षा उपरांत 5 वर्ष तक उषा मार्टिन ग्रुप एवं बिरला ग्रुप में कार्य, तत्पश्चात निजी इस्पात के कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्यरत, लेखन में रूचि 2010 के पश्चात्। 2011 में स्वास्थ्य के चलते सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव। तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य, यात्रा वर्णन, बाल कविता, काव्य, आलेख (शोध वैदिक सनातन दर्शन) एवं आर्थिक विषय पर, अध्यात्म में विशेष रुचि।

सम्मान :

1. इस्पात में विशेष कर स्टेनलेस स्टील के उत्थान में विशेष योगदान हेतु ''भारत गौरव'' सम्मान प्राप्त।
2. विद्या वाचस्पति सम्मान (विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ)।
3. पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा केंद्रीय राजभाषा समिति का राजभाषा गौरव सम्मान प्राप्त।
4. अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्य शिखर सम्मान। (पूर्व में यह सम्मान नीरज जी, वाजपेयी जी, डॉ. कर्ण सिंह इत्यादि को दिया गया)
5. प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य सम्मान (संघ की पत्रिका चाणक्य वार्ता ग्रुप द्वारा) महामहिम राज्यपाल जगदीश जी धनखड़ द्वारा श्रेष्ठ साहित्यकार हेतु।
6. बिहार साहित्य सम्मेलन जो कि बाबू राजेंद्र प्रसाद ने स्थापित की है, द्वारा साहित्य मार्तण्ड सम्मान।

पुस्तकें :

कुल 30 पुस्तकें प्रकाशित, कई अन्य प्रकाशन के क्रम में। इनमें अनुवाद, काव्य, शिक्षा, आर्थिक, अध्यात्म विवेचना इत्यादि हर विषय पर है।

1. श्री दुर्गातिविनाशिनी, 2. प्रांजलि, 3. स्वरांजलि, 4. कुछ माणिक कुछ मोती, 5. वेद से वेदांत तक (9 उपनिषदों एवं वेदों के दो प्रमुख सूक्तों को नए काव्य), 6. आदि शंकर रस माधुरी, 7. भावांजलि, 8. हर हर महादेव, 9. सुभाषितम, 10. भारतीय दर्शन, 11. भारत के अन्य दर्शन, 12. वैदिक सनातन धर्म (शोध प्रथम कड़ी), 13. बुलबुले सी जिंदगी, 14. तिमिर ढलेगा, 15. महावाक्य, 16. गोपी गीत, 17. काव्य संहिता, 18. भ्रम भ्रामक भ्रांतियां, 19. मूल्यांकन, 20. एक्सीडेंटल टूर इन हाइबरनेशन, 21. सुरतरिंगिनी, 22. मनुस्मृति समीक्षा, 23. वेदों का परिचय, 24. श्रीमद् भागवत महापुराण समीक्षा, 25. अड़सठ शरद, 26. हे माँ, 27. ऋचाओं से पावन माँ, 28. चमत्कृत करती भाषा संस्कृत, 29. हे गोविंद हे गोपाल, 30. बून्द बून्द सागर।

भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के acedemia.edu नामक ब्लॉग में नियमित रूप से आलेखों का प्रकाशन।

शुक्तिका प्रकाशन की प्रस्तुति

आईएसबीएन	पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
978-93-84435-00-4	श्री दुर्गति विनाशिनी	सुरेश चौधरी 'इंदु'	175/-
978-93-84435-01-4	प्रांजलि	सुरेश चौधरी 'इंदु'	150/-
978-93-84435-02-8	अक्षरों की ओट से	कंबाइंड कलेक्शन	250/-
978-93-84435-03-5	शुभमस्तु	नवोदय साहित्यकार मंच	125/-
978-93-84435-04-2	पावनी	कंबाइंड कलेक्शन	125/-
978-93-84435-05-9	मुक्त उड़ान	कुमार गौरव अजितेंदु	100/-
978-93-84435-06-6	वेद से वेदांत तक	सुरेश चौधरी 'इंदु'	250/-
978-93-84435-07-3	निर्झरिका	कंबाइंड कलेक्शन	400/-
978-93-84435-08-0	यादों के झरोखे से	वंदना दुबे	150/-
978-93-84435-09-7	वक्त के सैलाब में	कमलेश श्रीवास्तव	150/-
978-93-84435-10-3	पारिजात	कंबाइंड कलेक्शन	200/-
978-93-84435-11-0	लेगेसी ऑफ लिजेंड के.एल. सहगल	विनोद सोंथालिया/ कमल बेई	1200/-
978-93-84435-12-7	वीथिका	कंबाइंड कलेक्शन	250/-
978-93-84435-13-4	कुछ माणिक कुछ मोती	सुरेश चौधरी 'इंदु'	200/-
978-93-84435-14-1	स्वरांजलि	सुरेश चौधरी 'इंदु'	100/-
978-93-84435-16-5	भारतीय छंद विधान	सुरेश चौधरी 'इंदु'	300/-
978-93-84435-18-9	बुलबुले सी जिंदगी	सुरेश चौधरी 'इंदु'	125/-
978-93-84435-19-6	मेरी बंगलादेश यात्रा	रावेल पुष्प	....
978-93-84435-20-2	मुद्राक्रांति	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-21-9	कालाधन	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-22-6	मुद्रा विप्रय	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....

आईएसबीएन	पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
978-93-84435-23-3	बाल गीत	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-24-0	सांप	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-25-7	हम आपके हैं कौन	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-26-4	आनंद का राजमार्ग	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-27-1	दांव पेंच	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-28-8	अरुणोदय	डॉ. उम्मीद सिंह बैद	....
978-93-84435-29-5	तिमिर ढलेगा	सुरेश चौधरी 'इंदु'	200/-
978-93-84435-30-1	शुभाषितम्	सुरेश चौधरी 'इंदु'	100/-
978-93-84435-31-8	स्नेहलता जी	सुनीता जैन	....
978-93-84435-32-5	गोपी गीत	....	....
978-93-84435-33-2	विकास के बढ़ते कदम	....	....
978-93-84435-34-9	रंग बदलती जिंदगी	....	....
978-93-84435-35-6	अंतरदाह	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरुद्ध'	....
978-93-84435-37-0	आदिशंकर रसमाधुरी-2	सुरेश चौधरी 'इंदु'	....
978-81-848093-0-2	अड़सठ शरद रबिन्द्र की शरण	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-848093-5-7	साढ़े छह आने	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरुद्ध'	
978-81-848093-6-4	बुलबुले सी जिंदगी	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-848093-7-1	भ्रम और भ्रांतियां	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-848093-8-8	आसमान को छू लें	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-848093-4-0	सुरतरिंगिणी माँ जाह्नवी	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-848093-3-3	मूल्यांकन	सुरेश चौधरी एवं विलास सोजी	
978-81-848093-2-6	ऋचाओं सी पावन मां	सुरेश चौधरी 'इंदु'	

आईएसबीएन	पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
978-81-848093-1-9	नवरचना काव्य संग्रह	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-848093-9-5	भारतीय दर्शन	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-953391-1-2	चमत्कृत करती भाषा संस्कृत	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-81-953391-2-9	मंजिर	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरुद्ध'	
978-81-953391-3-6	परमवीर	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरुद्ध'	
978-81-953391-9-8	सत्यम कवि मेखला	विश्वजीत सपन	
978-81-953391-0-5	निर्झरिणी	सुधा अहलुवालिया	
978-81-953391-8-1	संतुलित गृहस्थ जीवन के सरल उपाय	हंसाबेन जयदेव योगेन्द्र	
978-81-953391-7-4	तुम्हारे खातिर	लक्ष्मण रमानुज लड़ीवाला	
978-81-953391-6-7	बूंद बूंद सागर	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-93-94660-00-7	छलकी गागर नेह की	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरुद्ध'	
978-93-94660-01-4	भोर की ओर	सुधा अहलुवालिया	
978-93-94660-02-1	एक घर बचपन वाला	सुधा अहलुवालिया	
978-93-94660-03-8	वंदे मातरम्	इंदु मंडल	
978-93-94660-04-5	मरूस्थल की हिरानी	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरुद्ध'	300/-
978-93-94660-06-9	भारतीय त्योहार	सुरेश चौधरी 'इंदु'	
978-93-94660-05-2	माँ ऋचाओं से पावन	सुरेश चौधरी 'इंदु'	1100/-
978-93-94660-07-6	आदिशंकर रसमाधुरी	सुरेश चौधरी 'इंदु'	150/-
978-93-94660-08-3	हर हर महादेव	सुरेश चौधरी 'इंदु'	180/-
978-93-94660-10-6	शून्य से शून्य तक	सुरेश चौधरी 'इंदु'	250/-